शोध पत्रों को प्रकाशित करने के लिए विधि मान्य आई.एस.एस.एन 2321–9645

कल, आज और कल भी बहुपयोगी

# विश्व स्नेह समाज

वर्ष 20, अंक 09, जून 2021

## हिन्दी मासिक, एक रचनात्मक क्रांति

मूल्य : 15 रुपये

## चतुर्थ काव्य सम्राट प्रतियोगिता

# पुरस्कार राशि 11000/रुपये मात्र

इस प्रतियोगिता में उम्र का कोई बंधन नहीं है. देश-विदेश का कोई भी रचनाकार इसमें प्रतिभाग कर सकता है. दिए गए विषय पर आपको अपनी एच रचना पठनीय हस्तलिपि अथवा टंकित कराकर भेजनी होगी। रचना के साथ अपना पूरा नाम, पता, एक फोटो, ह्वाट्सएप नंबर अगर ई-मेल हो ईमेल आईडी भेजना होगा। इस बात का विशेष ध्यान रखें कि रचना वाचन में अधिकतम पांच मिनट की हो.

## नियम एवं शर्तें:

1. रचना मौलिक होनी चाहिए. इसके लिए मौलिकता का प्रमाण देना आवश्यक होगा। किसी भी स्तर पर मौलिकता में कमी सिद्ध होने पर प्रतिभागिता रद्द कर दी जाएगी।
2. प्रतियोगिता तीन चरणों में होगी. प्रत्येक चरण के विजयी प्रतिभागियों को ह्वाट्स समूह, ई-मेल के माध्यम से जानकारी दी जाएगी.
3. प्रथम चरण के विजयी प्रतिभागियों को विश्व स्नेह समाज की मासिक पत्रिका एक वर्ष की सदस्यता तथा एक सौ रुपये मूल्य की पुस्तकें निःशुल्क दी जाएगी।
4. द्वितीय चरण के लिए केवल 15 रचनाकारों का चयन किया जाएगा. द्वितीय चरण के विजयी प्रतिभागियों को विश्व स्नेह समाज की मासिक पत्रिका दो वर्ष की सदस्यता तथा दो सौ रुपये की पुस्तकें निःशुल्क दी जाएगी।
5. तृतीय एवं अंतिम चरण के लिए 11 रचनाकारों का चयन किया जाएगा. तृतीय चरण में पहुंचने वाले प्रतिभागियों को स्वयं उपस्थित होकर काव्य पाठ करना होगा। प्रथम स्थान पाने वाले प्रतिभागी को 11000/रुपये नगद एवं काव्य सम्राट की उपाधि, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वालों को स्मृति चिन्ह और प्रमाण पत्र तथा शेष 08 प्रतिभागियों को प्रशस्ति पत्र प्रदान किया जाएगा। तृतीय चरण के समस्त प्रतिभागियों को विश्व स्नेह समाज की मासिक पत्रिका पंचवर्षीय सदस्यता तथा तीन सौ रुपये मूल्य की पुस्तकें निःशुल्क दी जाएगी।
6. प्रतिभागियों को मांगे गये विवरण के साथ रुपये पांच सौ का चेक/डीडी/आरटीजीएस/नेफ्ट/आन लाईन अथवा सीधे संस्थान के खाते में जमा कर जमा रसीद की प्रति भेजना अनिवार्य होगा।

खाता धारक का नामः **'सचिव विष्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद'**

बैंक का नाम : **युनियन बैंक ऑफ इंडिया** शाखा : **प्रीतम नगर, इलाहाबाद**

खाता संख्याः **538702010009259** आई.एफ.एस. कोडः **यूबीआईएन 0553875**

## विषय : भ्रष्टाचार

**आवेदन की अंतिम तिथि 15 दिसम्बर 2021**

**सचिव, विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान**

एलआईजी—93, नीम सराय कॉलोनी, प्रयागराज-211011, ह्वाटसएप नं०: 9335155949,

sahityaseva@rediffmail.com, hindiseva15@gmail.com

कल, आज और कल भी बहुपयोगी

# विश्व स्नेह समाज

मासिक, वर्ष:20, अंकः 09
जून : 2021

**मूल्य-शिक्षा प्रसार में महिलाओं की भूमिका:..............5**

मूल्य शिक्षा मनुष्य को नैतिक, विकासोन्मुखी, सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्यों से जोड़कर रखती है. मनुष्य को वांछित कर्त्तव्यपरायणता की अनुभूति कराती है.

**विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, प्रयागराज का आभासी त्रिदिवसीय आयोजन का सकुशल समापन ... 12–17**

## इस अंक में......

स्थायी स्तम्भ

अपनी बातः हम जब आएंगे, घर-घर थैली पहुंचाएंगे .........04
परिचर्चा : कोरोना और पर्यावरण .......................07
विश्व की सर्वाधिक वैज्ञानिक भाषा संस्कृत. ..................10
हिन्दी साहित्य में चर्चित महामारियां ......17
संस्थान की प्रगति रिपोर्ट एवं अन्य विवरण ........18
कविताए/गीत/ग़ज़लः चौताली दीक्षित, संगीता शर्मा, डॉ0 अशोक कुमार शर्मा, श्रीमती वन्दना श्रीवास्तव 'वान्या', डॉ0 हितेश कुमार शर्मा, अनन्या राय, डॉ0 जेबा रसीद, सुरेन्द्र पाल सोनी ...................11, 26, 27, 28, 33
कहानीः अनोखा प्यार, ड्राईवर रख ले, इच्छा शक्ति ............20, 23, 29
पाठकों की चिट्ठी ........31
साहित्य समाचार, .....11, 24, 34, 35
लघु कथाएंः शबनम शर्मा, कु0 रत्ना सिंह ........32, 33
फिल्म संसार के 125 वर्ष .........36
स्वास्थ्य .... .38

मुख्य संरक्षक
श्री बुद्धिसेन शर्मा
संरक्षक सदस्य
श्री डी.पी.उपाध्याय, बलिया, उ.प्र.

प्रबंध सम्पादक
श्रीमती जया
विज्ञापन प्रबंधक
महेन्द्र कुमार अग्रवाल

ब्यूरो
ब्रज बिहारी ब्रजेश, खीरी
निगम प्रकाश कश्यप, मिर्जापुर, उ.प्र.

सम्पादक
गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

संपादकीय कार्यालयः
एल.आई.जी.–93, नीम सराय कालोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद –211011 का0: 09335155949
ई–मेल:vsnehsamaj@rediffmail.com

सभी पद अवैतनिक हैं
पत्रिका में प्रकाशित रचना का कोई भी पारिश्रमिक देय नहीं है।
प्रिंट लाईन–विश्व स्नेह समाज राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका, यूपीहिन्दी/

2001/8380, सर्वाधिकार सुरक्षित है. स्वामी की लिखित अनुमति के बिना सम्पूर्ण या आंशिक पुर्न प्रकाशन प्रतिबंधित है. स्वतत्वाधिकारी स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक और संपादक गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी के द्वारा भार्गव प्रेस बाई का बाग, इलाहाबाद से प्रकाशित किया.

नोटःपत्रिका में प्रकाशित रचनाओं, समाचारों इत्यादि से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं हैं. इसके लिए लेखक, रचनाकार, सूचनाकार स्वयं ही उत्तरदायी हैं. जन–जन को सूचना मिलने के उद्देश्य से सभी के विचार, संदेश, आलोचना, शिकायत छापी जाती है. पत्रिका से सम्बन्धित किसी भी प्रकार के वाद–विवाद का निपटारा केवल इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, की अदालतों में होगा.

अपनी बात

# हम जब आएंगे, घर-घर थैली पहुचाएंगे

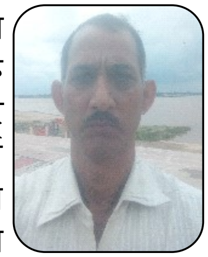

देश के विभिन्न राज्यों में अगले वर्ष होने वाले चुनावों और आगामी 2024 के लोकसभा चुनाव व कोरोना महामारी के बढ़ते प्रकोप के मद्दे नज़र हमारी पार्टी भारतीय भ्रष्टाचार पार्टी ने यह निर्णय लिया है कि हम कोई भी रैली, रोड शो व जनसभा नहीं करेंगे. बल्कि घर-घर जाकर सीधे थैली पहुचाएगे. कर भला तो हो भला. हम जनता का भला करेंगे और जनता हमारी पार्टी का. न भीड़, न माईक, न पोस्टर और न ही बैनर. रैली, रोड शो व जनसभा से दो गज की दूरी प्रभावित होती है और लोग कहते है कि चुनावी रैली से कोरोना फैलता है, प्रदूषणविद कहते है कि माईक से ध्वनि प्रदूषण फैलता है और सभ्रांत लोगों की नींद उड़ जाती है जिससे दिनचर्या खराब होती है. पोस्टर बनाने के लिए कागज चाहिए, कागज आते है, पेड़ से, पेड़ कटने से पर्यावरण का नुकसान होता है. ऐसा पर्यावरण विद कहते है. साथ ही पेड़ कटने से पशु, पक्षियों का आहार घटता है, उनके आश्रय स्थल को नुकसान होता है. न जाने कितने पशु पक्षियों को बेघर होना पड़ता है. हमारी पार्टी एक राष्ट्र भक्त, पर्यावरण प्रेमी, प्रदूषण प्रेमी, जीव प्रेमी पार्टी है. हम किसी भी दशा में इनका नुकसान बर्दाश्त नहीं कर सकते. हम सबका कल्याण चाहते है, चाहे उनके पास वोट देने का अधिकार हो न हो. हमारी पार्टी का मूल सिद्धात है कर भला, तो हो भला. सबका बखूबी ध्यान रखेंगे. आपको शिकायत करने का भरपूर मौका देगे और साथ ही कभी न्याय न होने देने पूरा प्रयास करेंगे. यह हमारा वादा है आप सबसे. हमारी भारतीय संस्कृति में, शास्त्रों में लिखा है मेहनत करो तो फल मिलता है, आज नहीं तो कल मिलता है. लेकिन हमारी पार्टी का सीधा सा कहना है बचपन में खूब खेलो, युवा अवस्था में खूब मजे लो. पढ़ने लिखकर कोई फायदा नहीं. स्कूल में प्रवेश लो और कागज देकर कागज (डिग्री) मुफ्त ले जाओ. हमारी पार्टी की सरकार बनते ही सभी सरकारी/अर्द्ध सरकारी अध्यापकों को घर-घर थैला बांटने और थैला बटोरने में लगा देगें. केवल प्रवेश के माह में और परिणाम के दिन अध्यापकों को विद्यालय आना होगा. पुलिस विभाग का काम सिर्फ कागज वसूली करना होगा. हमारी पार्टी के भावी सिद्धातों को देखते हुए ही वर्षो पूर्व साहित्यकार मलूक दास ने कहा था :

**अजगर करे न चाकरी, पंछी करें न काज।**
**दास मलूका कह गए, सबके दाता राम।**

मतदाताओं को हमारे लिए मेहनत करने की जरूरत नहीं. मतदाता तो हमारे भगवान है. जब तक हमारी पार्टी भारतीय भ्रष्टाचार पार्टी (बीबीपी) की सरकार नहीं बन जाती हम आपको घर घर थैला पहुचाते रहेंगे. न पढ़ने की जरुरत और न काम करने की. घर बैठे रहे, ह्वाटसएप देखे, ट्वीट करे, फेसबुक देखे, वीडियो देखे, फिल्म देखे, गेम खेले. पूरी छूट. बस वोट हमें देते रहे. सभी गरीबों को मुफ्त अनाज, मुफ्त का मोबाइल डाटा, मुफ्त की नकली दवा. सब कुछ मुफ्त. घर में पड़े रहे, मुफ्त का माल खाते रहे बस वोट देने जरुर जाए और हमारी पार्टी को ही वोट दे, विपक्ष का नामोनिशान मिटा दे. अगर विपक्ष रहेगा तो फालतू का हल्ला करेगा. न कोई मीडिया, न कोई अखबार, नहीं कोई न्यायालय, न कोई झगड़ा. न कोई किच-किच न कोई खिच खिच.

अगर आपको लगता है कि हमारी पार्टी आपके लिए फायदेमंद है तो दो हजार की नोट पर मुहर लगाकर हमारी पार्टी के प्रत्याशियों को आगामी चुनावों में विजयी बनाए. न कोई भ्रष्टाचार, न शिष्टाचार. हम एक तरफ से करेगे सबका कल्याण. घर बैठे थैला ले, हमारे कार्यकर्ता, आपसे घर-घर मिलेगे और आपके दरवाजे पर उपलब्ध कराएंगे थैला.

जय हिन्द, जय हिन्दुस्तान

संपादक

# मूल्य-शिक्षा प्रसार में महिलाओं की भूमिका

**मूल्य शिक्षा मनुष्य को नैतिक, विकासोन्मुखी, सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्यों से जोड़कर रखती है. मनुष्य को वांछित कर्त्तव्यपरायणता की अनुभूति कराती है. उसमें, व्यक्तिगत से सार्वभौमिक स्तर तक व्यवस्था के सुचारु संचालनार्थ अपरिहार्य उत्तरदायित्वों के निर्वहन के लिए अलख जलाती है.**

-डा० रवीन्द्र कुमार
(पद्मश्री और सरदार पटेल राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित भारतीय शिक्षाशास्त्री एवं मेरठ विश्वविद्यालय, मेरठ, उत्तर प्रदेश के पूर्व कुलपति हैं)


'मूल्य शिक्षा' में केवल दो शब्द हैं : 'मूल्य' एवं 'शिक्षा', लेकिन, इन दो ही शब्दों से बनी 'मूल्य शिक्षा' की अवधारणा और उद्देश्य अति व्यापक है.

**पहला शब्द 'मूल्य':** एक वचनीय परिप्रेक्ष्य में मानव को व्यवहारों में रचनात्मकता की अनुभूति कराने वाला मूल तत्त्व है. मूल्य व्यक्ति को सदाचार में प्रविष्ट होने के लिए मार्गदर्शन प्रदान करता है. जब कोई मूल्य अनेक जन के जीवन व्यवहारों का सामान्य रूप से मार्गदर्शक बन जाता है. सदाचार उनके जीवन से सम्बद्ध हो जाता है, तो उस स्थिति में वृहद् कल्याण का मार्ग प्रशस्त हो जाता है. व्यक्तियों के जीवन को ऊँचाई देने के साथ, वृहद् कल्याण ही अन्ततः सभी मूल्यों का प्रयोजन होता है. वृहद् उन्नति, विशाल स्तरीय जनोत्थान, मूल्यों की आधारभूत भावना होती है.

**दूसरा शब्द 'शिक्षा'** : वह प्रक्रिया जो जीवनभर जारी रहती है. मनुष्य के सर्वांगीण-चहुँमुखी विकास को समर्पित है, तथा मानव को मुक्ति के द्वार तक ले जाती है. इसीलिए तो भारत में कहा गया है, **'साविद्या या विमुक्तये विद्या वही है, जो मुक्ति प्रदान करे.'** व्यक्ति के सर्वांगीण विकास के साथ ही, वृहद् मानव कल्याण के मूल उद्देश्य को केन्द्र में रखते हुए 'मूल्य' और 'शिक्षा' एक-दूसरे से अभिन्नतः जुड़े हुए हैं. मूल्य शिक्षा, इसीलिए, वह है, जो किसी भी प्रकार के भेदभाव के बिना -समान रूप से महिला-पुरुष के चहुँमुखी विकास का मार्ग प्रशस्त करे. मूल्य शिक्षा मनुष्य को नैतिक, विकासोन्मुखी, सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्यों से जोड़कर रखती है. मनुष्य को वांछित कर्त्तव्यपरायणता की अनुभूति कराती है. उसमें, व्यक्तिगत से सार्वभौमिक स्तर तक व्यवस्था के सुचारु संचालनार्थ अपरिहार्य उत्तरदायित्वों के निर्वहन के लिए अलख जलाती है. इस हेतु उसे प्रेरित करती है. इस प्रकार, मेरा अपना स्पष्ट मत है कि मूल्य शिक्षा, अपने सच्चे अर्थ में, वास्तविक शिक्षा का ही प्रतिरूप है. दूसरे शब्दों में, यह शिक्षा की मूल भावना का प्रकटीकरण है. जीवन सार्थकता का माध्यम अथवा मार्ग है. प्रीचीनकालिक और सत्यमयी भारतीय उद्घोषणा **'सा विद्या या विमुक्तये'** की सम्पुष्टि है.

हजारों वर्षों से अति समृद्ध संस्कृति के पोषक तथा अतिप्राचीनकाल से ही आध्यात्मिक-शैक्षणिक विश्वगुरु के रूप में अपनी पहचान रखने वाले -संसारभर को ज्ञान-विज्ञान में नेतृत्व प्रदान करने वाले देश हिन्दुस्तान में मूल्य शिक्षा का महत्त्व, प्रतिष्ठा और गौरव भी शताब्दियों पुराना है. मूल्य शिक्षा की अवधारणा विश्वभर के लिए नई हो सकती है. पश्चिमी जगत के देशों में इससे सम्बन्धित कई आधुनिक अवधारणाएँ सामने आई हैं, जैसेकि मानव-मूल्य प्रतिष्ठान की वर्ष 1995 ईसवीं की 'व्यापक मूल्य शिक्षा योजना' लेकिन, कायिक-शरीरश्रम के साथ ही व्यायाम एवं योगाभ्यास, सदाचरण और आत्मनिर्भरता के दृष्टिकोण से ऋषियों -ऋषिकाओं व महर्षियों की छत्रछाया में ज्ञान प्रदान किया जाना प्राचीनकाल से ही व्यक्ति के चहुँमुखी विकास को समर्पित भारत की सुदृढ़ शिक्षा व्यवस्था -प्रक्रिया से अभिन्नतः जुड़े पक्ष हैं. मूल्य शिक्षा का पक्ष स्वाभाविक रूप से प्रचीनकालिक महर्षियों-ऋषियों-ऋषिकाओं और महापुरुषों-युगपुरुषों के जीवनकाल से जुड़ा है. महिलाओं के दृष्टिकोण से हम अति विशेष रूप से वैदिक मंत्रों से जुड़ीं-मंत्र दृष्टा रोमशा, लोपामुद्रा, विश्ववारा, शाश्वती

व अपाला जैसी विभिन्न ऋषिकाओं व उपनिषद कालीन मैत्रेयी तथा गार्गी जैसी परम विदुषियों के नाम विशेष रूप से और गर्व के साथ हम आज भी ले सकते हैं.

संक्षेप में कहने का तात्पर्य यह है कि मूल्य शिक्षा अतिप्राचीनकाल से ही भारत की शिक्षा-प्रक्रिया की पूरक-प्रतिरूप है. इसमें महिला वर्ग का योगदान प्रारम्भ से ही महत्त्वपूर्ण तथा उल्लेखनीय है. इन ऋषिकाओं से जुड़े शास्त्रार्थ प्रकरणों से मूल्य शिक्षा का श्रेष्ठतः प्रकटीकरण होता है. मैं यहाँ ऐसे किसी विस्तार में नहीं जा रहा हूँ, लेकिन निश्चित रूप यह कह सकता हूँ कि उनके शास्त्रार्थों आदि से प्रकट मूल्य शिक्षा के पक्ष आजतक भी विचारणीय हैं. वे जानने-समझने योग्य हैं.

मूल्य शिक्षा का प्रचीनकालिक भारतीय सन्दर्भ हो अथवा कोई पश्चिमी जगत से जुड़ा आधुनिकसिद्धान्त, लेकिन जो पहलू अनिवार्यतः इसके साथ सम्बद्ध हैं, या इसके मूल में हैं, वे सभी कालों में सामान्यतः एक समान रहे हैं. वर्तमान में भी वे ही प्रमुख हैं तथा मूल्य शिक्षा की मूल भावना, उद्देश्य एवं ध्येय को प्रकट करते हैं. नैतिक-चारित्रिक विकास, व्यवहार-कुशलता और दक्षता के साथ आत्म-निर्भरता, मूल्य शिक्षा से जुड़े पहलू हैं. ये व्यक्ति के चहुँमुखी विकास के मार्ग को प्रशस्त करते हैं, जो, मैं पुनः कहूंगा, वास्तव में, शिक्षा की मूल भावना और उद्देश्य है. मूल्य शिक्षा को केन्द्र में रखकर जब हम नैतिक-चारित्रिक विकास की बात करते हैं, तो हमें, तब भी, निश्चिततः यह समझ लेना चाहिए कि इसका प्रयोजन व्यक्ति में उत्तरदायित्व भावना की अनुभूति एवं कर्त्तव्य-निर्वहन के लिए सदैव जागृति उत्पन्न करना है. सामान्यतः भी नैतिकता की कसौटी अन्ततः समुचित रूप से कर्त्तव्य-पालन -उत्तरदायित्व-निर्वहन ही है. इस सम्बन्ध में मैं अपने निर्धारित मत को प्रतिबद्धता के साथ दोहराते हुए कहता हूँ, 'व्यक्ति में नैतिकता की परख उसके द्वारा उत्तरदायित्वों के निर्वहन से ही हो सकती है. जो व्यक्ति भली-भाँति अपने उत्तरदायित्वों को समझता है और उनका निर्वहन करता है, वही, वास्तव में, नैतिकता का पालन करता है. केवल ऐसा व्यक्ति ही नैतिक होने का दावा कर सकता है.' नैतिकता-सदाचार, व्यवहार-कुशलता और आत्मनिर्भरता सुनिश्चित करने वाली-मानव के चहुँमुखी विकास, अर्थात् जीवन सार्थकता को समर्पित मूल्य शिक्षा की प्रथम पाठशाला परिवार है. प्रथम अध्यापिका, निस्सन्देह, माँ ही होती है. मूल्य शिक्षा के इस मूल स्रोत और केन्द्र से स्वतः ही स्पष्ट है कि इसके प्रारम्भ और प्रसार में महिला वर्ग की भूमिका सर्वप्रमुख है. इतना ही नहीं, इस सम्बन्ध में महिलाओं की भूमिका, वर्तमान में भी परिवार की धुरी होने के कारण, निर्णायक है, और सदा प्रासंगिक भी है.

मूल्य शिक्षा-सम्बन्धी जो समकालीन -आधुनिक अवधारणाएँ हैं, वे इसके प्रसार में, सामाजिक ढाँचे में मूलभूत परिवर्तन के बाद भी-संस्थाओं के प्रभावी होने के बावजूद, परिवारों की भूमिका को अतिमहत्त्वपूर्ण स्वीकार करती हैं. जब परिवारों की भूमिका की बात हो, तो उसकी धुरी-महिला के निर्णायक योगदान की स्थिति स्वतः ही समझ में आ जाती है. इस सम्बन्ध में एलिस और मोरगन की पारिवारिक मूल्य योजना जैसे विचार भी हमारे सामने हैं. महिलाएँ, यह वास्तविकता है, मूल्य शिक्षा की प्रारम्भिक स्रोत हैं. पारिवारिक -सामाजिक स्तरों पर इसके प्रसार में स्त्रियों की भूमिका अतिमहत्त्वपूर्ण है। साथ ही, शैक्षणिक संस्थाओं के माध्यम से, भारत ही नहीं, अपितु विश्व के सभी देशों में इस दिशा में महिलाओं का योगदान सराहनीय और उल्लेखनीय है. मैं स्वयं विश्वभर में मूल्य शिक्षा के क्षेत्र में महिला वर्ग की भूमिका और योगदान का अपने अनुभवों से साक्षी हूँ.

स्वयं शिक्षा क्षेत्र में अपने निरन्तर बढ़ते कदमों और सशक्तिकरण के स्तर में होती वृद्धि के चलते महिला वर्ग, निस्सन्देह, मूल्य शिक्षा के प्रसार में अभूतपूर्व योगदान कर सकता है. महिला वर्ग संसार की कुल जनसँख्या का लगभग आधा है. वर्तमान में विश्व में लगभग तीन अरब बयासी करोड़ महिलाएँ हैं. इसमें भी लगभग एक अरब किशोरियाँ और युवतियाँ हैं. यदि पचास वर्ष से कम आयु की महिलाओं की बात की जाए, तो यह संख्या लगभग दो अरब होगी. इसलिए, महिलाएँ इस हेतु पूर्णतः सक्षम हैं -बात केवल इसे उनके एक परम कर्त्तव्य के रूप में लेने की है. इस दिशा में महिलाओं से श्रेष्ठ कोई अन्य नहीं कर सकता. इसलिए, अपनी माताओं-बहनों से मेरा यह सादर अनुरोध रहेगा कि वे आगे आएँ. मूल्य शिक्षा प्रसार कार्य को नेतृत्व प्रदान करें. इस बहुत बड़े कार्य के माध्यम से मानवता को उसके वांछित स्तर तक पहुँचाने में अपनी भूमिका का निर्वहन करें.

# कोरोना और पर्यावरण का संबंध

**प्रकृति के प्रमुख पांच उपादान माने गए हैं जिनमें आकाश, वायु, तेज, जल और धरती है यही हमारे आसपास के परिवेश या वातावरण का निर्माण करते है. प्रकृति और मनुष्य का संबंध उतना ही पुराना है जितना कि सृष्टि का उद्‌भव और विकास का इतिहास है मानो चोली दामन का संबंध है.**

-प्रो० ललिता बी. जोगड़,
ए/205, सुन्दर पार्क, वीरा देसाई लिंक रोड, अंधेरी (प०)मुंबई-53, महाराष्ट्र

युद्ध का नया रूप कोरोना वायरस आ गया है जिसने देश को हिला दिया. आज संपूर्ण विश्व कोरोना से जूझ रहा है. हमारा देश भी पूरी शक्ति के साथ कोरोना को हराने के लिए प्रयत्नशील है. लॉकडाउन के दौर में ना जाने कितने परेशान हैं चाहे वह बुजुर्ग हो नौजवान हो या बच्चा हो. कुछ लोग अपने घर में है और कुछ घर से दूर रोजी रोटी के लिए. जो बाहर है उनका तो बहुत बुरा हाल है. नौकरी छीन गई, ना कोई और उपाय, जैसे- तैसे जीवन जी रहे हैं.

आज डॉक्टर, सेना, पुलिस, मीडिया स्वच्छता कर्मी आदि सभी देवदूत बनकर सभी की रक्षा कर रहे हैं. अनेक सामाजिक संस्थाएं अपनी ओर से मदद के हाथ फैला रही है. बहुत अच्छा कार्य कर रहे हैं. बुजुर्गो के लिए थायराइड, बीपी, डायबिटीज, हार्ट इत्यादि दवाइयों का स्टॉक रखें जिसे वो प्रतिदिन लेते हैं. भूख से कम खाने की आदत डालें. हो सके तो छाछ, सलाद, हरी सब्जी प्रतिदिन उपयोग में लें अति आवश्यक कार्य हो तो ही घर से बाहर जाएं अन्यथा घर में ही रहे अपने करीबी रिश्तेदारों और पड़ोसियों का विशेष ध्यान रखें. सार्वजनिक रूप से भीड़ में ना मिले. रोग की हमेशा चर्चा नहीं करें. गहरा सांस लेने की आदत डालें प्रतिदिन आसन, प्राणायाम, योगा, ध्यान, अवश्य करें. ईर्ष्या भाव से सर्वथा बचाव करें निषेधात्मक विचारों से बचें रहे. रोग मन पर हावी न होने पाए. किसी भी परिस्थिति में आत्मविश्वास न खोए. इसमें अनेक समस्याएं आई थी एवं आगे भी आएगी. जान बची तो लाखों पाए. अति उत्साह में कोई गलत कदम ना उठाएं. यथार्थ में पुरुषार्थ करने में ही सफलता निश्चित है. आत्मविश्वास को बनाए रखेंगे तो इस संकट की घड़ी में शांति प्रसन्नता से रह पाएंगे और दूसरों को भी मार्गदर्शन कर पाएंगे.

प्रकृति के प्रमुख पांच उपादान माने गए हैं जिनमें आकाश, वायु, तेज, जल और धरती है यही हमारे आसपास के परिवेश या वातावरण का निर्माण करते हैं और इन्हीं से मनुष्य के शरीर की संरचना होती है. इन पांच महाभूतों में से परस्पर उचित सामंजस्य होना अति आवश्यक है. इन सब में परस्पर सामंजस्य नहीं होना पर्यावरण के लिए हानिकारक माना जाता है. पर्यावरण हमारी चारों ओर का वह आवरण है जिसमें मनुष्य, जीव-जंतु, पेड़-पौधे पहाड़ पर्वत पठार नदियां मैदान वनस्पति आदि सम्मिलित है.

प्रकृति एवं पर्यावण का ज्ञान मनुष्य को भी है अपने निवास आदि को प्रकृति की गोद में उचित स्थान पर बनाया प्रकृति के साथ छेड़खानी या इनका किसी अन्य रूप में दोहन करना आरंभ किया है तभी से प्रकृति अपना विकराल रूप धारण कर किसी विशेष आपदा के रूप में हमारे सामने उपस्थित होती हैं और यही आज वर्तमान में कोरोना वायरस महामारी के रूप में संपूर्ण विश्व में फैली है. इस महामारी पर उचित निदान पाने के लिए हमें प्रकृति एवं उसके प्रमुख उपादान को जानना आवश्यक है.

जैसे यज्ञ करना विभिन्न राष्ट्रों के वैज्ञानिकों एवं शोधकर्ता का मानना है कि यज्ञ सामग्री हवन सामग्री या हवन समाग्री से यज्ञ करने पर ऑक्सीजन की वृद्धि होगी साथ ही विषैली गैसों के दुष्प्रभाव को कम किया जा सकता है. जीवो के प्रति दया भाव रखना किसी भी जीव की हत्या नहीं करना एवं मांस का भक्षण करना पर्यावरण को क्षति पहुंचाने के साथ ही मनुष्य को बीमारियों से ग्रसित करता है.

कोरोंना की रोकथाम के लिए वर्तमान में नीम के ऊपर गिलोय सर्वश्रेष्ठ औषधि मानी गई है. प्राचीन काल में ऋषि मुनि विभिन्न प्रकार की

औषधियों कर वर्षो जीवित रहते थे. हमारे बुजुर्ग कहते थे सौ बीमारी की एक दवा स्वच्छ पानी साफ हवा. हवा के साथ होने के साथ-साथ महामारी पर नियंत्रण करने के लिए जल शुद्ध होना अति आवश्यक है. नियमित रूप से व्यायाम हर बीमारी के लिए आवश्यक है. साथ ही यदि कोई व्यक्ति अपनी दिनचर्या में प्रकृति के उपादान के साथ जीवन जीना आरंभ करे तो सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है. यातायात के साधनों पर नियंत्रण रख या इनका कम उपयोग करके हम पर्यावरण को शुद्ध रखने के साथ ही महामारियो पर भी नियंत्रण पा सकते हैं.

पर्यावरण की शुद्धि एवं महामारी के नियंत्रण के लिए हमें खनन क्षेत्र पर नियंत्रण करना होगा. कारखानों से निकलने वाली विभिन्न प्रकार के अपशिष्ट जिन्हें नदियों में बहा दिया जाता है जो जल को सर्वाधिक दूषित करते हैं, उनके अपशिष्ट को रोककर नदियों में न बहाते हुए उचित ढंग से निस्तारण करने की अति आवश्यकता है. दूषित जल संक्रमित वक्ति को और अधिक बीमारियों से ग्रसित बनाता है. भारत की बहुत बड़ी आबादी आज भी शुद्ध जल के अभाव में अनेक बीमारियों से ग्रसित होकर प्राण त्याग देती है.

प्रकृति और मनुष्य का संबंध उतना ही पुराना है जितना कि सृष्टि का उद्भव और विकास का इतिहास है मानो चोली दामन का संबंध है. इसी अटूट संबंध की अभिव्यक्ति धर्म, कला, दर्शन और साहित्य में चिरकाल से होती आ रही है.

# कोरोना और पर्यावरण

**कोरोना के लॉकडाउन में जलवायु, मिट्टी, हवा, पर्यावरण, सभी के प्रदूषण में गिरावट दिखाई देने लगी. वातावरण ऐसे खिल उठा, मानो लॉकडाउन पर्यावरण के लिए वरदान बन कर आया है. तालाबंदी से छाया सन्नाटा वन्यजीवों के लिए वरदान बन गया, पर्यटक शहरों में जानवर सड़कों पर आराम से चहल कदमी करते नजर आने लगे.**

**-पूर्णिमा उमेश झेंडे,**
हिंदी विभाग प्रमुख, भोसला मिलिटरी कॉलेज, नासिक, महाराष्ट्र


दिसंबर 2019 को पहली बार चीन के वुहान शहर में कोरोना वायरस की शुरुआत हुई. इस वायरस ने चीन में हाहाकार मचा दिया. जिसके कारण चीन में पहली बार तालाबंदी घोषित की गई. कोरोना वायरस का प्रकोप पहले धीरे-धीरे और बाद में तेजी से पूरी दुनिया भर होता दिखाई देने लगा. इस वायरस से आज तक लाखों लोगों की जानें चली गई. पूरी मानव जाति पर कोरोना वायरस का कहर टूट पड़ा. लोगों ने इस वायरस के प्रकोप से बचने के लिए अपने रहन-सहन का तरीका ही बदल दिया. समूह प्रिय मनुष्य जाति एक दूसरे से दूर रहने के लिए, एक दूसरे से बात न करने के लिए आज मजबूर हो गई. पूरी दुनिया उलट-पुलट हो गई.

कोरोना वायरस के संक्रमण को रोकने के लिए पूरी दुनिया में एक एक करके सभी देशों ने कड़े निर्बंध वाली तालाबंदी घोषित करनी पड़ी. जिसके अंतर्गत हर देश के उद्योग धंधे, व्यापार, बाजार, कल कारखाने, यातायात के सभी साधन, स्कूल, कार्यालय, थिएटर, होटल, पर्यटन, आदि सब कुछ बंद करके सभी लोगों को अपने घर में बंद रहने की पाबंदी लगा दी गई. कोरोना वायरस के संक्रमण के चलते इटली में तो इतने लोगों की मौत हो गई कि दूसरे विश्वयुद्ध में भी इतने लोगों की मौत नहीं हुई थी. विकसित राष्ट्र अमेरिका भी कोरोना वायरस के संक्रमण से हतबल हो गया. ऑस्ट्रेलिया, जापान, रशिया ऐसे देश जो विज्ञान और टेक्नोलॉजी में अव्वल है वह भी कोरोना वायरस से टूट गए. आज डेढ़ साल होने को आया सभी देशों के साथ भारतवर्ष भी कोरोनावायरस की चपेट में इस कदर फंसा हुआ है कि हजारों की तादाद में लोग मर रहे हैं. कोरोना वायरस के बढ़ते संक्रमण के कारण डेढ़ साल से लगातार चल रही तालाबंदी के कारण सभी देशों की आर्थिक स्थिति का स्तर घटता जा रहा है. बेरोजगारी, भुखमरी की समस्या बढ़ती

जा रही है. हर देश की आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक स्थिति पर दबाव बनता जा रहा है. मनुष्य का मानसिक संतुलन घर बैठे बैठे बिगड़ रहा है. मनुष्य के विकास की रफ्तार कम पड़ती जा रही है. एक सूक्ष्म वायरस ने पूरी दुनिया को सोचने और अपने आप को परखने के लिए मजबूर कर दिया है. कोरोना से मानवता को जरूर बड़ा नुकसान हुआ है लेकिन पर्यावरण पर इसका सकारात्मक प्रभाव पड़ा है. वायरस के संक्रमण को रोकने के लिए सभी देशों में लंबे समय तक लॉकडाउन रहा, इसके चलते प्रकृति में मनुष्य की दखल कम हुई. परिणाम स्वरूप प्रकृति खुलकर, निखर कर, नैसर्गिक स्वरूप में आई. लॉक डाउन की वजह से तमाम कल कारखाने, परिवहन व्यवस्था पूरी तरह से बंद होने के कारण तथा लोगों का ऑफिस की जगह घर से ही काम करने के कारण वातावरण में 50 प्रतिशत प्रदूषण में कमी आई. भारत की ही बात ले तो बड़े-बड़े शहरों में जहां सबसे अधिक प्रदूषण होता है वहां पर सुबह उठते ही पक्षियों का मधुर स्वर, साफ नीला आसमान, साफ-सुथरे और फूलों से गुलजार पेड़ पौधे नजर आने लगे. कार्बन डाइ ऑक्साइड की जगह ऑक्सीजन से भरी शुद्ध हवा, नदियों और झीलों में एकदम साफ स्वच्छ पानी, सड़कें वीरान पर मंजर साफ हो गया. यह आश्चर्य चकित करने वाला दृश्य सालों बाद नजर आया. ऐसा रमणीय दृश्य सिर्फ भारत में ही नहीं दुनिया भर में नजर आने लगा था. इस लॉकडाउन में जलवायु, मिट्टी, हवा, पर्यावरण, सभी के प्रदूषण में गिरावट दिखाई देने लगी. तालाबंदी से छाया सन्नाटा वन्यजीवों के लिए वरदान बन गया, पर्यटक शहरों में भरी दोपहरी में तेंदुए के शावक, गजराज, हिरन जैसे जानवर सड़कों पर आराम से चहल कदमी करते नजर आने लगे. सभी तीर्थ स्थलों पर श्रद्धालुओं का आना बंद होने के कारण वहां की नदियों का, झीलों और तालाबों का पानी स्वच्छ और शुद्ध होता दिखाई दिया. जिसकी स्वच्छता और निर्मलता के लिए सभी सरकारे करोड़ों रुपए खर्च करने के बावजूद भी यह काम न कर सके वह काम इस कोरोना वायरस से लगे लॉकडाउन ने करके दिखाया. संक्षेप में कहा जाए तो आधुनिक वैज्ञानिक युग में विकास की गति और अति होड़ के कारण जलवायु परिवर्तन, ग्लोबल वार्मिंग तथा अविवेकी मानवीय गतिविधियों के कारण पर्यावरणीय घटकों में मनुष्य और पृथ्वी के लिए जो हानिकारक बदलाव हो रहे हैं, उसके परिणाम स्वरूप बीमारियों में वृद्धी, धरती की हवा पानी और जंगल में बढ़ती अस्वस्थता, अनेक प्रजातियों के विलुप्त होने का खतरा, मौसमी घटनाओं में असामान्य वृद्धी, पर्यावरणीय घटकों की कम होती कुदरती ताकत इन सब के लिए अविवेकी मनुष्य कैसे जिम्मेदार है यह कोरोना वायरस के कारण लगे लॉकडाउन से दुनिया को पता चला.

मनुष्य की अमानवीयता-देखा जाए तो यह विनाशकारी कोरोना वायरस की उत्पत्ति और संक्रमण के लिए मनुष्य की अविवेकी और अमानवीयवृत्ती ही जिम्मेदार है. कोरोना वायरस विज्ञान संशोधन के अनुसार अंधेरे में रहने वाले चमगादड़ के शरीर में ही पाया जाता है. मानव की पाशवी, अमानवीय वृत्ती के कारण मनुष्य इस सृष्टि के हर जीव जंतु को मारकर खाना चाहता है जो प्रकृति के नियम के विरुद्ध है. वन्य जीव जंतु के निवास स्थान जंगल, वन नदी, पहाड़, पेड़ पौधे इन्हें नष्ट करता जा रहा है. इसी पाशवी स्वभाव के कारण इस धरती पर कोरोना वायरस का संक्रमण शुरू हुआ जिसने यह दिखा दिया कि प्रकृति के साथ छेड़खानी करना कितना महंगा साबित हो सकता है. इस वायरस से बचने के लिए हमें बार-बार स्वच्छता को अपनाना पड़ रहा है. अप्रत्यक्ष रूप से सृष्टि ने ही हमें साफ सफाई का अर्थात खुद की और पर्यावरण की स्वच्छता का महत्व समझाया.

मनुष्य को सीख- इस महामारी ने एक बात साफ कर दी कि मुश्किल घड़ी में सारी दुनिया एक खड़ी होकर एक दूसरे का साथ देने के लिए तैयार है तो फिर हम यही जज्बा, इच्छा शक्ति, पर्यावरण बचाने के लिए क्यों नहीं दिखाते? हमें यह समझना जरूरी है कि पर्यावरण का अर्थ इस धरती के वन, जंगल या पेड़ पौधे इतने तक सीमित नहीं है बल्कि इस पृथ्वी पर रहने वाला हर छोटा सा छोटा जीव जंतु, हवा, पानी, वायु, आसमान, धरती यह सब पर्यावरण का ही एक अंश है यह सब एक दूसरे पर अवलंबित है और इसी से इस प्रकृति का जैविक चक्र निरंतर चलता है और इसी जैविक चक्र पर अवलंबित है हमारा मानवी जीवन.

पर्यावरण को बचाने के लिए लोगों को अपनी सोच, बुरी आदतें बदलनी होगी. अगर वह खुद नहीं बदलते हैं तो उन्हें जबरन बदलना पड़ेगा. आज हमें यह संकल्प करना होगा कि कोरोना तथा पर्यावरण प्रदूषण से बचने के लिए हमें स्वच्छता और हरे भरे वातावरण की ओर पूरी दुनिया को एक साथ कदम से कदम बढ़ा कर आगे चलना पड़ेगा.

# विश्व की सर्वाधिक वैज्ञानिक भाषा संस्कृत

संस्कृत में 1700 धातुएं, 70 प्रत्यय और 80 उपसर्ग हैं, इनके योग से जो शब्द बनते हैं, उनकी संख्या 27 लाख 20 हजार होती है. यदि दो शब्दों से बने सामासिक शब्दों को जोड़ते हैं तो उनकी संख्या लगभग 769 करोड़ हो जाती है.

संस्कृत इंडो-यूरोपियन लैंग्वेज की सबसे प्राचीन भाषा है और सबसे वैज्ञानिक भाषा भी है. इसके सकारात्मक तरंगों के कारण ही ज्यादातर श्लोक संस्कृत में हैं. भारत में संस्कृत से लोगों का जुड़ाव खत्म हो रहा है लेकिन विदेशों में इसके प्रति रुझाान बढ़ रहा है.

ब्रह्मांड में सर्वत्र गति है. गति के होने से ध्वनि प्रकट होती है. ध्वनि से शब्द परिलक्षित होते हैं और शब्दों से भाषा का निर्माण होता है. आज अनेकों भाषायें प्रचलित हैं. किन्तु इनका काल निश्चित है कोई सौ वर्ष, कोई पाँच सौ तो कोई हजार वर्ष पहले जन्मी. साथ ही इन भिन्न भिन्न भाषाओं का जब भी जन्म हुआ, उस समय अन्य भाषाओं का अस्तित्व था. अतः पूर्व से ही भाषा का ज्ञान होने के कारण एक नयी भाषा को जन्म देना अधिक कठिन कार्य नहीं है. किन्तु फिर भी साधारण मनुष्यों द्वारा साधारण रीति से बिना किसी वैज्ञानिक आधार के निर्माण की गयी सभी भाषाओं में भाषागत दोष दिखते हैं. ये सभी भाषाए पूर्ण शुद्धता, स्पष्टता एवं वैज्ञानिकता की कसौटी पर खरी नहीं उतरती क्योंकि ये सिर्फ और सिर्फ एक दूसरे की बातों को समझने के साधन मात्र के उद्देश्य से बिना किसी सूक्ष्म वैज्ञानिकीय चिंतन के बनाई गयी. किन्तु मनुष्य उत्पत्ति के आरंभिक काल में, धरती पर किसी भी भाषा का अस्तित्व न था.

तो सोचिए किस प्रकार भाषा का निर्माण संभव हुआ होगा? शब्दों का आधार ध्वनि है, तब ध्वनि थी तो स्वाभाविक है शब्द भी थे. किन्तु व्यक्त नहीं हुये थे, अर्थात् उनका ज्ञान नहीं था. प्राचीन ऋषियों ने मनुष्य जीवन की आत्मिक एवं लौकिक उन्नति व विकास में शब्दों के महत्व और शब्दों की अमरता का गंभीर आकलन किया. उन्होंने एकाग्रचित्त हो ध्वानपूर्वक, बार बार मुख से अलग प्रकार की ध्वनियाँ उच्चारित की और ये जानने में प्रयासरत रहे कि मुख-विवर के किस सूक्ष्म अंग से, कैसे और कहाँ से ध्वनि जन्म ले रही है. तत्पश्चात् निरंतर अथक प्रयासों के फलस्वरूप उन्होने परिपूर्ण, पूर्ण शुद्ध, स्पष्ट एवं अनुनाद क्षमता से युक्त ध्वनियों को ही भाषा के रूप में चुना.

सूर्य के एक ओर से 9 रश्मियाँ निकलती हैं और सूर्य के चारो ओर से 9 भिन्न भिन्न रश्मियों के निकलने से कुल निकली 36 रश्मियों की ध्वनियों पर संस्कृत के 36 स्वर बने और इन 36 रश्मियों के पृथ्वी के आठ वसुओ से टकराने से 72 प्रकार की ध्वनि उत्पन्न होती हैं. जिनसे संस्कृत के 72 व्यंजन बने.

इस प्रकार ब्रह्माण्ड से निकलने वाली कुल 108 ध्वनियों पर संस्कृत की रुवर्णमाला आधारित है. ब्रह्मांड की इन ध्वनियों के रहस्य का ज्ञान वेदों से मिलता है. इन ध्वनियों को नासा ने भी स्वीकार किया है जिससे स्पष्ट हो जाता है कि प्राचीन ऋषि मुनियों को उन ध्वनियों का ज्ञान था और उन्ही ध्वनियों के आधार पर उन्होने पूर्णशुद्ध भाषा को अभिव्यक्त किया.

अतः प्राचीनतम आर्यभाषा जो ब्रह्मांडीय-संगीत थी उसका नाम 'संस्कृत' पड़ा. संस्कृत संस् + कृत् अर्थात् श्वासों से निर्मित अथवा साँसो से बनी एवं स्वयं से कृत, जो कि ऋषियों के ध्यान लगाने व परस्पर संपर्क से अभिव्यक्त हुयी.

कालांतर में रुपाणिनी ने नियमित व्याकरण के द्वारा संस्कृत को परिष्कृत एवं सर्वम्य प्रयोग में आने योग्य रूप प्रदान किया. पाणिनीय-व्याकरण ही संस्कृत का प्राचीनतम व सर्वश्रेष्ठ व्याकरण है. दिव्य व दैवीय गुणों से युक्त, अतिपरिष्कृत, परमार्जित, सर्वाधिक व्यवस्थित, अलंकृत सौन्दर्य से युक्त, पूर्ण समृद्ध व सम्पन्न, पूर्णवैज्ञानिक देववाणी संस्कृत-मनुष्य की आत्मचेतना को जागृत करने वाली, सात्विकता में वृद्धि, बुद्धि व आत्मबल प्रदान करने वाली सम्पूर्ण विश्व की सर्वश्रेष्ठ भाषा है. अन्य सभी भाषाओ में त्रुटि होती है पर इस भाषा में कोई त्रुटि नहीं है. इसके उच्चारण की शुद्धता को इतना सुरक्षित रखा गया कि सहस्त्रों वर्षो से लेकर आज तक वैदिक मन्त्रों की ध्वनियों व मात्राओं में कोई पाठभेद नहीं हुआ और ऐसा सिर्फ हम ही नहीं कह रहे बल्कि विश्व के आधुनिक विद्वानों और भाषाविदों ने भी एक स्वर में संस्कृत को पूर्णवैज्ञानिक एवं सर्वश्रेष्ठ माना है.

संस्कृत की सर्वोत्तम शब्द-विन्यास युक्ति के, गणित के, कम्प्यूटर आदि के स्तर पर नासा व अन्य वैज्ञानिक व भाषाविद

संस्थाओं ने भी इस भाषा को एकमात्र वैज्ञानिक भाषा मानते हुये इसका अध्ययन आरंभ कराया है और भविष्य में भाषा-क्रांति के माध्यम से आने वाला समय संस्कृत का बताया है.

अतः अंग्रेजी बोलने में बड़ा गौरव अनुभव करने वाले, अंग्रेजी में गिटपिट करके गुब्बारे की तरह फूल जाने वाले कुछ महाशय जो संस्कृत में दोष गिनाते हैं उन्हें कुँए से निकलकर संस्कृत की वैज्ञानिकता का एवं संस्कृत के विषय में विश्व के सभी विद्वानों का मत जानना चाहिए.

नासा की वेबसाईट पर जाकर संस्कृत का महत्व पढ़ें. काफी शर्म की बात है कि भारत की भूमि पर ऐसे लोग हैं जिन्हें अमृतमयी वाणी संस्कृत में दोष और विदेशी भाषाओं में गुण ही गुण नजर आते हैं वो भी तब जब विदेशी भाषा वाले संस्कृत को सर्वश्रेष्ठ मान रहे हैं.

अतः जब हम अपने बच्चों को कई विषय पढ़ा सकते हैं तो संस्कृत पढ़ाने में संकोच नहीं करना चाहिए. देश विदेश में हुये कई शोधो के अनुसार संस्कृत मस्तिष्क को काफी तीव्र करती है जिससे अन्य भाषाओं व विषयों को समझने में काफी सरलता होती है, साथ ही यह सत्वगुण में वृद्धि करते हुये नैतिक बल व चरित्र को भी सात्विक बनाती है.

अतः सभी को यथायोग्य संस्कृत का अध्ययन करना चाहिए. आज दुनियाँ भर में लगभग 6900 भाषाओं का प्रयोग किया जाता है. लेकिन क्या आपने कभी सोचा है कि इन भाषाओं की जननी कौन है? नहीं? कोई बात नहीं आज हम आपको दुनिया की सबसे पुरानी भाषा के बारे में विस्तृत जानकारी देने जा रहे हैं.

# मैं नारी हूं

हे ब्रह्म,मैं तुझ पर वारी हूं
तेरे सृष्टि की सबसे सुंदर रचना
मैं नारी हूं
कोमल हृदय में सदियों से समेटे हूं
अनगिनत मर्मस्पर्शी भावनाओं का खजाना
अनेकों रूपों में सर्वत्र विराजी हूं
हे ब्रह्म, मैं नादान, अनाड़ी हूं
तेरे सृष्टि की सबसे सुंदर रचना
मैं नारी हूं
बादल मन को कोहरे की चादर में लपेटे हूं
झमाझम बरसती वेदनाओं का तराना
तन, मन सब कुछ अपनों पर वारी हूं
हे ब्रह्म, मैं ह्रदय से आभारी हूं
तेरे सृष्टि की सबसे सुंदर रचना,
मैं नारी हूं
चित्कार, रुदन, घायल मन मुस्कान में लपेटे हूं
अत्याचार, बलात्कार, संघार का फसाना
अनेकों निर्भया बनने की अपराधी हूं
हे ब्रह्म,मैं निशब्द अंतर्मन से हारी हूं
तेरे सृष्टि की सबसे सुंदर रचना
मैं नारी हूं

-चौताली दीक्षित,
सहायक प्रवक्ता जूलोजी, संत एन्थोनी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, शिलांग, मेघालय

## डॉ० जेबा को बेस्ट स्क्रीप्ट राईटर अवार्ड

विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, प्रयागराज की राजस्थान प्रभारी डॉ. जेबा रसीद, जोधपुर, राजस्थान को तीसरे अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव में बेस्ट स्क्रीप्ट राईटर अवार्ड से विभूषित किया गया. सम्मानित होने पर संस्थान के अध्यक्ष डॉ०शहाबुद्दीन नियाज मुहम्मद शेख, सचिव डॉ० गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी सहित डॉ० सीमा वर्मा, डॉ. मुक्ता कौशिक, डॉ० अनीता पंडा, डॉ० रश्मि चौबे, डॉ. अन्नपूर्णा श्रीवास्तव, श्री ओम प्रकाश त्रिपाठी, डॉ० रोहिनी डावरे, डॉ०पूर्णिमा उमेश झेंडे आदि ने बधाई दी तथा उनके लिए मंगलकामना की।

# विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, प्रयागराज का आभासी त्रिदिवसीय आयोजन का सकुशल समापन

**-बच्चों, बड़ो का मिला जूला साहित्यिक एवं सांस्कृतिक आयोजन**
**-13, 14 एवं 15 को जूम, यू-ट्यूब और फेस बुक पर सीधा प्रसारण हुआ।**
**-अमेरिका, कनाडा, मारीशस, ब्रिटेन सहित भारत के 20 राज्यों के लोगों ने इसे देखा**
**-कुल मिलाकर 2500 लोगों ने इस आयोजन को देखा।**

# बाल संसद से आरंभ हुआ रजत समारोह

विश्व की सुप्रतिष्ठित स्वैच्छिक हिंदी प्रचार प्रसार संस्था 'विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान, प्रयागराज, उ.प्र. ने अपनी स्थापना के पचीस वर्ष पूर्ण करने के उपलक्ष्य में त्रिदिवसीय आभासी रजत समारोह का आयोजन किया.

समारोह का पहला दिन १३ जून को 'बाल संसद' से आरंभ हुआ. इस अवसर पर बाल मुख्य अतिथि चि. ध्रुव मुद्गल, श्योपूर, म.प्र., बाल विशिष्ट अतिथि चि. शुभ द्विवेदी, प्रयागराज तथा कु. जिया खान, पुणे ने अध्यक्षता की. बाल संसद में 'ऑक्सिजन की उपयोगिता' पर परिचर्चा, काव्य पाठ, गीत, गायन, नृत्य, नाटक आदि सांस्कृतिक उपक्रमों का समावेश रहा.

समारोह का आरंभ कु.स्वरा त्रिपाठी, लखनऊ की सरस्वती वंदना से हुआ. स्वागत नृत्य कु. सानिका कुलकर्णी व कु. नयना देशमुख-औरंगाबाद ने प्रस्तुत किया. देश-विदेश से जुड़े बाल कलाकारों ने अपनी अभिनव प्रस्तुति से सभी को मोहित कर लिया. काव्य पाठ में कु. अनिशा देशपांडे, कु. खुशी वानखेडे- औरंगाबाद, महाराष्ट्र, अथर्व श्रीवास्तव-सुलतानपुर, प्रिया श्रीवास्तव रायबरेली, कु. श्रद्धा नायक, कु. आराध्या बोरसे, चि. प्रद्युम्न खामगांवकर, अर्णव कुलकर्णी, कु. स्वरा कुलकर्णी, कु. रेणुका गोविंदवार, औरंगाबाद, महाराष्ट्र, नाटक में चि. अहिर अग्रवाल-कॅलिफोर्निया, अमेरिका, नृत्य में कु. नव्या चंद्राकर -टेक्सास अमेरिका, कु०मानसी शर्मा-भोपाल, कु. आरोही अग्रवाल-केलीफोर्निया, अमेरिका, कथा में कु. जान्हवी गवले- औरंगाबाद, महाराष्ट्र, गीत में कु. विधि पाराशर, भोपाल, कु. वन्या श्रीवास्तव व ओमांश श्रीवास्तव, लखनऊ, की बोर्ड वादन में चि. शौनक जपे ने अपनी प्रस्तुतियों के माध्यम से सक्रिय सहभागिता दर्शायी.

## -देश-विदेश के बच्चों ने साहित्यिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों से मनमोहा
## -बच्चों ने की आक्सीजन की उपयोगिता पर की चर्चा
## - स्वरचित कविताओं से बच्चों ने हिन्दी को अपनाया।

ऑक्सिजन की उपयोगिता विषय पर आयोजित परिचर्चा में चि. शौर्य दीक्षित-गुडगांव, कु. माही हेनवर-भाटापारा, छ.ग., कु.सिद्धि जायसवाल-कोरवा, छ.ग. ने अपने विचार व्यक्त किए.

'बालसंसद' में चि. शुभ द्विवेदी, प्रयागराज ने अपने प्रास्तविक भाषण में संस्थान का परिचय देते हुए संस्थान के विकासात्मक व प्रचारात्मक कार्यों का विवरण प्रस्तुत किया. मुख्य दर्शक डॉ. चेतना उपाध्याय-अजमेर, राजस्थान ने अपने मंतव्य में कहा कि, बच्चों को अपने अभिभावकों की अपेक्षाओं को ध्यान में रखते हुए वे अपने जीवन को सफल बनाएँ. सामाजिक रिश्तों की भी कद्र करना वे सीखें. पढाई के साथ अपनी रूचि को भी परिपक्व बनाए.

डॉ. यन्तुदेव बुधु, मॉरिशस ने अपने

उद्‌बोधन में कहा कि अपनी विविधताओं के कारण बाल संसद का आज का आयोजन उत्तम सिद्ध हुआ है. वैश्विक महामारी के बीच बाल वक्ताओं ने ऑक्सिजन की उपयोगिता पर अपना मत प्रदर्शित करते हुए सभी को प्रेरित किया.

संस्थान के अध्यक्ष डॉ. शहाबुद्दीन नियाज मुहम्मद शेख-पुणे महाराष्ट्र तथा सचिव डॉ. गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी, प्रयागराज ने अपने आशीर्वचनों सहित बाल कलाकारों की विभिन्न प्रस्तुतियों पर अतीव प्रसन्नता व्यक्त की.

बाल संसद की अध्यक्षता कर रही कु. जिया खान ने अपने अध्यक्षीय समापन में समस्त अभिनव प्रस्तुतियों की चर्चा करते हुए कहा कि ऑक्सिजन पर ही हमारा जीवन अवलंबित है. बिना ऑक्सिजन के हमारा शरीर निष्प्राण

होता है. अतः पर्यावरण  सुरक्षा की दृष्टि से अधिकाधिक वृक्ष लगाकर उनका संवर्धन भी करना चाहिए.
बाल संसद का सफल संचालन कु.अवनी तिवारी, इंदौर, म.प्र. ने तथा धन्यवाद ज्ञापन दिवस प्रमुख डॉ. रश्मि चौबे, गाजियाबाद, उ.प्र. ने किया.
आयोजन की सफलता में डॉ. अनसूया अग्रवाल, महासमुंद, डॉ. लता चौहान, बेंगलूरू, डॉ. सुनिता यादव, औरंगाबाद, डॉ. रजिया शाहनाज शेख, बसमतनगर, डॉ. पूर्णिमा झेंडे –नासिक, महाराष्ट्र आदि का अपूर्व सहयोग रहा.
इस भव्य आयोजन में दर्शक के रूप में श्री सुरेशचंन्द्र शुक्ल–ओस्लो, नॉर्वे, हरेराम वाजपेयी, –इंदौर, डॉ. हरिसिंह पाल, नई दिल्ली, मिथिलेश प्रसाद द्विवेदी, सोनभद्र, डॉ. जेबा रशिद, जोधपुर, श्रीमती वंदना श्रीवास्तव, लखनऊ, श्रीमती पुष्पा श्रीवास्तव, रायबरेली, डॉ० पूर्णिमा कौशिक, रायपुर, डॉ. राजश्री तिरविर–कर्नाटक, शहनाज अहमद, नांदेड़ महाराष्ट्र सहित जूम,

यू–ट्यूब, फेसबूक पटल पर लगभग पाँच सौ प्रतिभागियों द्वारा अपनी सक्रिय सहभागिता पंजीकृत की गई. आर्य नरसिंह, हिंगोली महाराष्ट्र द्वारा प्रस्तुत राष्ट्रगान के साथ प्रथम दिवस के समारोह का समापन हुआ.

### विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, प्रयागराज के त्रिदिवसीय आयोजन का दूसरा दिन

# हिंदी साहित्य का अस्तित्व सांझी संस्कृति से जुड़ा हुआ है : डा. हरिसिंह पाल

भारत भूमि पूण्य भूमि हैं. अतः हिंदी साहित्य का अस्तित्व सांझी संस्कृति से जुड़ा है. इस आशय प्रतिपादन नागरी लिपि परिषद, नई दिल्ली के महामंत्री डा. हरिसिंह पाल ने किया. विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान, प्रयागराज, उ.प्र. के रजत महोत्सव के आभासी द्वितीय दिवस पर आयोजित 'हिंदी साहित्य में व्यक्त सांझी संस्कृति' नामक परिचर्चा में मुख्य वक्ता के रूप में वे अपना वक्तव्य दे रहे थे. संस्थान के अध्यक्ष प्राचार्य डा. शहाबुद्दीन नियाज मुहम्मद शेख, पुणे, महाराष्ट्र ने समारोह की अध्यक्षता की.
डा. हरिसिंह पाल ने आगे कहा कि साहित्य कभी भी धर्म, जाति, पंथ पर अवलंबित नहीं होता है. भारतीय संस्कृति में विश्व की संस्कृतियों का मिलन भी पाया जाता हैं.
मुख्य वक्ता डा. हरेराम बाजपेयी–अध्यक्ष, हिंदी परिवार, इंदौर ने कहा कि संस्कृतियों का अनुपम श्रृंगार हिंदी में उपलब्ध है. हिंदी साहित्य के इतिहास के भक्ति काल व रीतिकाल पर दृष्टिपात करने के पश्चात प्रतीत होता है कि हिंदी साहित्य में गंगा जमुनी संस्कृति का अद्भुत मिलन पाया जाता है ग्रहण शीलता हिंदी की सबसे बड़ी विशेषता है.
वक्ता डा० रामनिवास साहू बिलासपुर, छत्तीसगढ़ ने प्रतिपादित किया कि सांझी संस्कृति में सर्व संभावनाओं का दर्शन होता है. हिंदी साहित्य में सांझी संस्कृति वास्तव में शोध का विषय है, जिसे उन्होंने सोदाहरण समझाया.
समारोह की अध्यक्षता कर रहे डा० शहाबुद्दीन नियाज मोहम्मद शेख ने कहा कि हिंदी ही एकमात्र ऐसी भाषा है, जिसमें सभी भारतीय भाषाओं के शब्दों को आत्मसात करने की अद्भुत शक्ति विद्यमान है. कतिपय विदेशी भाषाओं के शब्द हिंदी में पाए जाते हैं.

इस अवसर पर आयोजित काव्य पाठ में मुख्य अतिथि डॉ० मीरा सिंह, अमेरिका तथा विशिष्ट अतिथि सुश्री इंदु बैरठ, कालचेस्टर, ब्रिटेन के अतिरिक्त 11 राज्यों से एक-एक कवियों का आमंत्रित किया गया था. जिसमें डा० संगीता पाल, कच्छ, गुजरात, आचार्य अनमोल, नई दिल्ली, सुश्री अनुपमा प्रधान, शिलांग, मेघालय, श्रीमती गायत्री चौधरी, गंजाम, उड़ीसा, सुश्री प्रियंका गावित, नासिक, महाराष्ट्र, सुश्री कंचन शेंदुर्णीकर, इंदौर, म०प्र०, प्रेम तन्मय, जोधपुर, राजस्थान, डॉ० शीना इप्पन, केरल, श्रीमती शकुंतला तरार, रायपुर, छत्तीसगढ़, श्री राज टेकड़ीवाल, बेंगलुरु, कर्नाटक द्वारा अपनी सुंदर कविताओं को प्रस्तुत किया गया. श्रीमती प्रीति राही, बेंगलुरु, कर्नाटक ने अवधी भाषा के दो गीत प्रस्तुत करके सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया.

समारोह का आरंभ इंदौर, म०प्र० की कुमारी अवनी की सरस्वती वंदना से हुआ. स्वागत उद्बोधन प्रो० लता चौहान बेंगलुरु ने किया. श्रीमती पुष्पा शैली श्रीवास्तव ने प्रस्तावना की. विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान, प्रयागराज, के सचिव डॉ० गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी ने संस्थान की गतिविधियों पर प्रकाश डाला.

दिवस प्रमुख डॉ० पूर्णिमा झेंडे, नासिक, महाराष्ट्र ने सभी का धन्यवाद ज्ञापन किया तथा डॉ० मुक्ता कान्हा कौशिक, रायपुर, छत्तीसगढ़ ने समारोह संचालन किया. इस भव्य आयोजन में दर्शक के रूप में डॉ० रजिया शहनाज शेख, डा. सुनीता प्रेम यादव, डा० रश्मि चौबे, प्रो० लता चौहान, ओम प्रकाश त्रिपाठी, नरेंद्र भूषण, मिथिलेश प्रसाद द्विवेदी, डॉ. मेदिनी अंजनीकर, डा० वंदना अग्निहोत्री, डा. वंदना श्रीवास्तव, डॉ० विनय कुमार पाठक, श्रीमती उषा किरण, प्रो० महमूद पटेल, डॉ० सीमा वर्मा, डॉ० ज्योति जैन, डा. जेबा रशीद, डा० पूर्णिमा मालवीय, डा० बेबी कोलते, डा० सुमन अग्रवाल, डॉ० समीर सैयद इत्यादि उपस्थिति रहे.

## विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, प्रयागराज के त्रिदिवसीय आयोजन का तीसरा दिन

### -15 जून 2021 को हुआ त्रिदिवसीय रजत जयंती का समापन

### -'विश्व भाषा के रूप में हिन्दी की संभावनाएं' रहा परिचर्चा का विषय

'हिंदी का सूर्य कभी अस्त नहीं होगा. जब हिन्दुस्तान सो जाता है तब विदेश हिंदी बोलता है. अतः हिन्दी का भविष्य उज्ज्वल है. विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान भी अब हिन्दी के लिए कभी न सोने वाला संस्थान बन गया है.' उक्त उद्गार प्रो० सरन घई, एशिया आब्जर्बर के पूर्व संपादक ने विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान, प्रयागराज,

# हिंदी का सूर्य कभी अस्त नहीं होगा : प्रो.सरन घई

उत्तर प्रदेश के आभासी रजत समारोह के त्रि-दिवसीय समापन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में अपने वक्तव्य में कही. आयोजन की अध्यक्षता संस्थान के अध्यक्ष प्राचार्य डॉ० शहाबुद्दीन नियाज मोहम्मद शेख, पुणे, महाराष्ट्र ने की.

विशिष्ट अतिथि के रुप में उपस्थित केलीफोर्निया, अमेरिका से डा. अनीता कपूर ने कहा कि वास्तव में प्रवासी लेखन ही हिंदी को ऊंचाई पर ले गया है. मीडिया ने भी हिंदी को आगे बढाने में और हमें एक दूसरे से जोड़ने के लिये अहम भूमिका निभायी है.

इस अवसर पर आयोजित परिचर्चा 'विश्व भाषा के रूप में हिन्दी की संभावनाएं' विषय पर अति विशिष्ट वक्ता डा.विनय कुमार पाठक, पूर्व अध्यक्ष, राजभाषा आयोग, छ.ग. ने कहा कि, हिंदी राजाश्रय के बदले लोकाश्रय के बल पर आगे बढ़ी है. संस्कृत की संस्कृति, पालि-प्राकृत की प्रकृति हिंदी भाषा मे पायी जाती है. हिंदी हमारे आंदोलनों की भाषा रही है. विश्व में सर्वाधिक सरल, मधुर, बोधगम्य व वैज्ञानिक भाषा होने के कारण विश्व के डेढ़ सौ देशों में पढ़ाई जाती हैं.

विशिष्ट वक्ता डॉ० शंभू पवार झुंझुनु, राजस्थान नें कहा कि विश्व स्तर पर हिंदी बोलने वालों की संख्या निरंतर बढ़ रही है. मनोरंजन व तकनीकी क्षेत्र में भी हिंदी का बोलबाला है.

संस्थान के सचिव डॉ० गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी, प्रयागराज, उ० प्र० ने संस्थान की विगत 25 वर्षों की गतिविधियों पर विस्तार से प्रकाश डाला. साथ ही दिवंगत पदाधिकारियों के कार्यो को बताया तथा शुरुआती दौर के सहयोगियों की भूमिका को नमनीय बताया. उन्होंने आगे बताया कि संस्थान शीघ्र ही अपने निज पुस्तकालय एवं वाचनालय का लोकार्पण कराएगा जिसमें वृद्ध एवं असहाय लोगों के लिए आश्रय स्थल भी रहेगा.

समारोह की अध्यक्षता करते हुए डा. शहाबुद्दीन नियाज मोहम्मद शेख ने कहा कि हिंदी विश्व की भाषा बन चुकी है. विश्व भाषा के रूप में हिंदी में अपार संभावनाएं हैं. जो हिंदी 1950 में पांचवें क्रमांक पर थी, आज वह प्रथम क्रमांक पर है. अंग्रेजी मात्र साढ़े चार देशों की भाषा हैं. ब्रिटेन, अमेरिका, आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड. यह कनाडा की भी भाषा है, परंतु आधा कनाडा फ्रांसीसी बोलता है. अमेरिकन सरकार ने हिंदी के अध्ययन अध्यापन हेतु अलग कोष की निर्मिती की है.

समारोह का आरंभ श्रीमती ज्योति तिवारी, इंदौर, म०प्र० की सरस्वती वंदना से हुआ. कुमारी आख्या सिंह, नई दिल्ली ने गणेश वंदना की. डॉ० रजिया शहनाज शेख, बसमत नगर, महाराष्ट्र ने स्वागत उद्‌बोधन दिया. डॉ० पूर्णिमा उमेश झेंडे, नासिक, महाराष्ट्र ने स्वागत नृत्य प्रस्तुत किया. संस्थान की सक्रिय सदस्य डा.सीमा वर्मा, लखनऊ, ने संस्था के बारे में अपने अनुभवों पर प्रकाश डाला.

सोनभद्र, उ०प्र० से मीडिया फोरम ऑफ इंडिया न्यास के कार्यकारी अध्यक्ष श्री मिथिलेश प्रसाद द्विवेदी ने कहा कि संपूर्ण भारत के विभिन्न प्रांतों तथा विदेशों में हिंदी का प्रचार-प्रसार का अभिनव कार्य संस्थान ने किया है, जो अत्यंत प्रशंसनीय व अनुकरणीय है.

इस अवसर पर संस्थान के विगत 25 वर्षो की साहित्यिक व सांस्कृतिक गतिविधियों की झलक एक स्क्रीन द्वारा दिखाई गयी. संस्थान के कुलगीत का विमोचन भी किया गया. जिसको मूल रुप में श्रीमती वंदना श्रीवास्तव 'वान्या' लखनऊ, ने लिखा तथा संशोधन डॉ० सुनीता यादव ने किया. संकल्पना आदि रामचंद्र, संगीत संयोजन शौनक जपे, प्रोग्रामिंग व साउण्ड इंजीनियर सार्थक पांडव ने किया तथा डॉ० सुनीता यादव, शौनक जपे एवं सार्थक पांडव औरगाबाद, महाराष्ट्र ने इसे गाया. कुलगीत की रिर्काडिग कार्तिकेय स्टूडियो, औरंगाबाद में हुई.

आयोजन में कु० स्वरा त्रिपाठी, लखनऊ ने लोक नृत्य से तथा बांसुरी एवं तबला वादन में वेदांत कुलकर्णी व सुधांशु परलीकर, औरंगाबाद, महाराष्ट्र ने सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया.

डा. अनुसूया अग्रवाल, महासमुंद, छ.ग. ने धन्यवाद ज्ञापन किया तथा समारोह का संचालन दिवस प्रमुख डॉ० मुक्ता कान्हा कौशिक, रायपुर, छ.ग. ने किया. रमाकांत प्रसाद ने तकनीकी सहायता प्रदान की. समारोह की सफलता हेतु डा. सुनीता प्रेम

यादव, औरंगाबाद, महाराष्ट्र, डा. रश्मि चौबे, गाजियाबाद, उ.प्र., डॉ० पूर्णिमा उमेश झेडे, नासिक, महाराष्ट्र, डॉ० जेबा रसीद-राजस्थान ने विशेष प्रयत्न किए.

इस भव्य आयोजन में दर्शक के रूप में डा.मीरा सिंह, अमेरिका, श्री विक्रम सिंह, पूर्व पुलिस महानिदेशक, उ.प्र, प्रो.ललिता पी.जोगड़-महाराष्ट्र, श्री हरेराम बाजपेयी- इंदौर, डा.रामनिवास साहू, छ.ग., डा.प्रभु चौधरी-म.प्र., डा.मेदिनी अंजनीकर, डा.शबाना हबीब, डा.समीर सैयद, प्रोफेसर महबूब पटेल, प्रोफेसर नाना साहेब गोफणे, डा. बेबी कोलते, डा० भरत शेणकर, श्रीमती रोहिणी डावरे, डा.सुषमा कोंडे, महाराष्ट्र, डा.संगीता पाल-गुजरात, डा. संगीता कालरा, डॉ० ज्योति जैन, डा. वंदना अग्निहोत्री-इंदौर, डा० सुमन अग्रवाल-भोपाल,-म.प्र., श्रीमती पूर्णिमा कौशिक-छ.ग., श्री ओम प्रकाश त्रिपाठी, श्री राकेश शरण मिश्र-सोनभद्र, श्री सदाशिव विश्वकर्मा, डा.मधु शंखधर, डॉ. प्रंभाषु कुमार, श्री राजेश तिवारी, डा. पूर्णिमा मालवीय -प्रयागराज, श्री नरेंद्र भूषण, श्रीमती वंदना श्रीवास्तव,-लखनऊ, श्रीमति पुष्पा श्रीवास्तव 'शैली'- रायबरेली, उ.प्र., श्रीमती प्रतिभा पराशर-बिहार, डा० राजश्री तिरविर-कर्नाटक, श्रीमती पूर्णिमा कौशिक-छ.ग., सहित 550 से अधिक प्रतिभागियों ने अपनी उपस्थिति दर्ज की. सामूहिक राष्ट्रगान के साथ समारोह का समापन हुआ.

# हिन्दी साहित्य में चर्चित महामारियां

**प्रो० सूर्य प्रसाद दीक्षित**
लखनऊ, उ.प्र.

विगत चार-पाँच शताब्दियों में चार-पाँच बड़ी महामारियाँ विश्व में समय-समय पर फैली है प्रायः सौ-सौ वर्षो के अन्तराल में. एक महामारी प्लेग के नामम से 13वीं सदी में फैली थी. उसके बाद वही बीमारी 16वीं शताब्दी में काशी में आयी थी. उसका उल्लेख तुलसीदास ने 'हनुमान बाहुक' सहित 'कवितावली' में एवं 'विनयपत्रिका' में किया है. गोस्वामी जी ने लिखा-

**'एक ब्याधिवश नर मरहिं ये असाधि बहु ब्याधि।**
**पीवहिं संतत जीव कँह।'**

इसका संकेत 'वाकियात जहांगीरी' तथा 'इकबालनामा जहांगीरी' में प्राप्य है. दूसरी बार 1720 में प्लेग की महामारी फैली थी, जिसको 'ग्रेट प्लेग ऑफ मार्शल फ्रांस' नाम दिया गया था. इससे पूरे विश्व में लगभग पचास हजार लोग मरे थे. सन् 1820 में हैजा नाम से एक महामारी शुरू हुई थी, जो जापान, चीन, जावा, मारीशस और अरब देशों से होती हुई भारत में फैली थी. इसमें भी हजारों भारतीय काल कवलित हुए थे. सन् 1918 से 1920 के बीच स्पेनिश इन्फ्लुएजा नाम की जो महामारी भारत में फैली थी, उसने लगभग एक करोड़ बीस लाख लोगों की जान ले ली थी. उसके बाद गतवर्ष अर्थात 2020 ई० में कोरोना कोविड 19 का ताण्डव पूरे विश्व में दिखाई पड़ा. यह एक विचित्र दुर्योग है कि पिछली हर शताब्दी में कोई न कोई बीमारी विश्व-विभीषिका बनकर आती रही है. सन् 1847 के आसपास भारत को अकाल और महामारी का जो दुहरा प्रकोप झेलना पड़ा था, उसका उल्लेख भारतेन्दु के समकालीन साहित्यकार राधाकृष्ण दास ने किया है-

**घोर अकाल प्लेग की ज्वाला भारत जारन लागी।**
**राजा प्रजा त्रस्त भये डोलैं, सबन धीरता भागी।।**
**कराल अकाल प्लेग ने अतिशय प्रजा सतायो।**

इसी बीच अंग्रेज सरकार की ओर से 'विजयिनी विजय' मनायी गयी थी. सत्ता द्वारा किये प्रयास की सराहना करते हुए कवि ने एक ओर उसे 'प्लेगहिं मारि अकालहिं जारि' का श्रेय दिया, दूसरी ओर महामारी से हुए सर्वनाश का भी विवरण इस प्रकार प्रस्तुत किया-

**'इक तो महा अकाल काल सत्तावन आयो।**
**दूजो ज्वाला प्लेग चारिहूँ दिसि धधकायो।।**

**अगर आप चाहते हैं कि कोई चीज अच्छे से हो तो उसे खुद कीजिये.**

# प्रगति रिर्पोट व अन्य विवरण

1996 से 2004 तक संस्था द्वारा स्थानीय स्तर पर विभिन्न प्रकार के साहित्यिक, सांस्कृतिक, सामान्य ज्ञान, खेलकूद प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता रहा. इन प्रतियोगिताओं से तमाम दबी हुई प्रतिभाओ को आगे बढ़ने का सुअवसर प्राप्त हुआ. 12 मई 1996 को त्रैमासिक 'स्नेह' नाम से एक पत्र/पत्रिका का प्रकाशन प्रारम्भ किया गया जो 09.09.2001 को विधिवत भारत के समाचार पत्रों के पंजीयक कार्यालय में पंजीकृत होकर मासिक 'विश्व स्नेह समाज' नाम से निर्बाद्ध रुप से प्रकाशित हो रही है. पत्रिका को शोध पत्रों को प्रकाशित करने के लिए विधिवत मान्यता भी प्राप्त है.

15 जनवरी 2004 को देवरिया जिले में स्नेहाश्रम (अनाथाश्रम एवं वृद्धाश्रम) का शिलान्यास किया गया. वर्तमान में संस्थान द्वारा 8 पुस्तकालय भी संचालित है.

वर्ष 2003 में स्थानीय स्तर पर कुछ समाज सेवियों, पत्रकारों को सम्मानित कर, पुस्तक प्रदर्शनी, परिचर्चा के साथ साहित्य मेला का प्रारम्भ हुआ. 2005 से इस आयोजन में देश के विभिन्न क्षेत्रों से हिन्दी सेवियों, साहित्यकारों, पत्रकारों, सम्पादकों, समाज सेवियों से प्रविष्टियां आमंत्रित कर उनमें से निणार्यक मंडल द्वारा चयनित अलग-अलग सम्मानों के लिए किसी एक साहित्यकार, पत्रकार, हिन्दी सेवी को सम्मानित कर इसका विस्तार किया गया. 2005 के बाद केवल 2020 में कोविद-19 लाक डाउन (तालाबंदी) के कारण स्थगित रहा. इस आयोजन में देश के विभिन्न राज्यों से हिन्दी सेवी अपनी उपस्थिति दर्ज कराते रहे हैं. अब इस आयोजन में परिचर्चा, पत्र-पत्रिका एवं पुस्तक प्रदर्शनी, बाल काव्य प्रतियोगिता, कवि सम्मेलन, पुस्तकों का लोकार्पण एवं सारस्वत सम्मान भी शामिल कर लिया गया है. अब तक इस आयोजन में देश के लगभग शताधिक साहित्यकार सम्मानित किए जा चुके हैं. संस्थान के सम्मानों, उपाधियों की अपनी एक गरिमा है. जिसको प्राप्त करने के लिए साहित्यकार लालायित रहते हैं.

वर्ष 2004 में पहली बार देवरिया महोत्सव का आयोजन किया गया. जिसमें लेखक, सामाजिक चिंतक व सांसद मोहन सिंह मुख्य अतिथि के रुप में उपस्थित रहे तथा यह आयोजन वर्ष 2007 तक अनवरत जारी रहा. जिसमें जनपद स्तर के पत्रकारों, साहित्यकारों, समाज सेवियों, शिक्षकों को सम्मानित करने के साथ ही साथ प्रतियोगिताओं का भी आयोजन किया जाता रहा.

इलाहाबाद के बाहर संस्थान द्वारा आयोजित होने वाले कार्यक्रमों को साहित्य यात्रा नाम से 2010 में प्रारम्भ किया गया. प्रथम आयोजन हिन्दी पखवाड़ा में सोनभद्र में संस्थान के तत्कालीन कार्यसमिति सदस्य श्री मिथिलेश प्रसाद द्विवेदी जी द्वारा किया गया. दूसरा आयोजन हिन्दी सांसद हितेश कुमार शर्मा जी द्वारा बिजनौर, उत्तर प्रदेश में किया गया. तीसरा आयोजन छत्तीसगढ़ से हिन्दी सांसद श्री आर.मुत्थुस्वामी द्वारा किया गया. सोनभद्र में यह आयोजन 2018 तक अनवरत चलता रहा. यह आयोजन देश के 20 विभिन्न स्थानों पर किया जा चुका है. जिसे संस्था के स्थानीय प्रतिनिधि अपनी देख-रेख में सम्पन्न कराते है.

सर्वप्रथम 1997 में संस्था के सचिव (तत्कालीन निदेशक) की कम्प्यूटर की किताब लर्निंग कम्प्यूटर विद फन-1, एवं 2 का प्रकाशन किया गया. तदोपरान्त संस्थान द्वारा देश के विभिन्न राज्यों के साहित्यकारों की विभिन्न विधाओं की लगभग 150 पुस्तकें प्रकाशित की जा चुकी है.

वर्ष 2017 से संस्थान द्वारा काव्य सम्राट/लघुकथा सम्राट नगद ईनामी प्रतियोगिता का आयोजन प्रारम्भ किया गया. जिसमें देश/विदेश के रचनाकारों ने अपनी सहभागिता निभायी.

संस्थान हिन्दी सेवा एवं समाज सेवा के कार्यो में अपने सीमित साधनों के बावजूद बढ़ चढ़ कर हिस्सेदारी निभाता रहा है. हिन्दी लेखन पर समय-समय पर कार्यशालाओं के आयोजन, प्रतिभाओं को सम्मानित करने, अनाथालय एवं वृद्धाश्रम के संचालन के साथ ही पुस्तकालयों का संचालन, साहित्यिक

कार्यक्रमों का आयोजन, पुस्तकों का प्रकाशन आदि कार्य सुचारु से अनवरत चल रहे है. संस्थान के सदस्य एवं प्रतिनिधि पूरे भारत में है. भारत के 18 राज्यों में हमारे प्रतिनिधि (हिन्दी सांसद) मनोनित है जो अपने राज्य में संस्थान के उद्देश्यों की पूर्ति हेतु सक्रिय है.

रजत जयंती वर्ष के प्रारब्ध काल के पूर्व से कोरोना महामारी का संकट चरम पर चल रहा था. इसलिए संस्थान की प्रबंध समिति ने पूरे वर्ष भर ऑन लाईन प्रतियोगिताओं के आयोजन का निर्णय लिया. जो अनवरत जारी है. प्रत्येक माह की 15 तारिख को छत्तीसगढ़ ईकाई द्वारा हिन्दी लेखन के विविध आयाम एवं सामाजिक विषयों पर, उत्तर प्रदेश ईकाई द्वारा 30 तारिख को हिन्दी साहित्य के इतिहास पर चर्चा, प्रत्येक माह के प्रथम रविवार को बाल संसद (बच्चों के विविध आयोजन) क्रमवार चल रही है. इसके अतिरिक्त ऑन लाईन प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता,

**कोरोना काल के आयोजन :**

(25 मार्च 2020 से अब तक)

1—लॉक डाउन-01, लॉक डाउन-02, लॉक डाउन-03,लॉक डाउन-04, लॉक डाउन -05, लॉक डाउन-06 ऑन लाईन स्टेटस प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता

2-लॉक डाउन-उत्तम तीन स्टेटस प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता-01

3-लॉक डाउन-उत्तम तीन स्टेटस प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता-02

4-लॉक डाउन-सर्वोत्तम तीन स्टेटस प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता

5-तालाबंदी काव्य प्रतियोगिता-01, तालाबंदी काव्य प्रतियोगिता-02, तालाबंदी काव्य प्रतियोगिता-03, तालाबंदी काव्य प्रतियोगिता-04, तालाबंदी काव्य प्रतियोगिता -05, तालाबंदी काव्य प्रतियोगिता-06

6—ताला बंदी उत्तम तीन काव्य प्रतियोगिता-01, ताला बंदी उत्तम तीन काव्य प्रतियोगिता-02

7—ताला बंदी सर्वोत्तम तीन काव्य प्रतियोगिता

8-बच्चा पार्टी स्टेटस प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता-01, 02, 03

9—साप्ताहिक स्टेटस प्रतियोगिता मुद्दा

10-संस्थान की प्रतिभाएं-इसके अंतर्गत संस्थान के सदस्यों, पदाधिकारियों तथा उनके पालकों के अंदर कोई विशेष कला है जैसे काव्य, चित्रकला, कहानी, नृत्य, गायन आदि का संस्थान के यूट्यूब चैनल पर प्रसारण

11—हम तैयार है (नृत्य, गायन एवं चित्रकला) 15 वर्ष तक की उम्र के बच्चों के लिए

12—हम किसी से कम नहीं (नृत्य, गायन एवं चित्रकला) 15 वर्ष से ऊपर के बच्चों के लिए

13—बाजी आपकी

14—हंसगुल्ली सरताज

15—बाल संसद (15 वर्ष तक के बच्चों का विषय विशेष पर चर्चा)

**आगामी योजनाएं:**

१- शीघ्र ही गौशाला एवं गौ शोध संस्थान खोलने की योजना है.

२- सम्मानित होने वाले इलाहाबाद के बाहर साहित्यकारों को यात्रा व्यय देने पर विचार.

३-कुछ अन्य स्थानों पर पुस्तकालय/वाचनालय खोलने का

४- पुस्तकों का निःशुल्क प्रकाशन

**अपीलः** संस्थान आप सभी हिन्दी प्रेमियों से यह आग्रह करता है कि संस्था को यथा संभव सहयोग करे व करायें. ताकि हिन्दी सेवा के साथ-साथ समाज सेवा के कार्यो को अंजाम दिया जा सके. आप अपना सहयोग प्रतिदिन या साप्ताहिक एक कप चाय की कटौती करके भी कर सकते है ताकि किसी अनाथ को भोजन, वस्त्र, पुस्तकें दी जा सके. आप अपने किसी परिवार के सदस्यों के नाम पर पुरस्कार, कमरे बनवाकर, अलमारी, फर्नीचर आदि प्रदान कर भी सहयोग कर सकते है. आपका छोटा सा सहयोग किसी की जिंदगी संवार सकता है. विशेष बात यह है कि संस्थान ने अभी तक किसी भी सरकारी योजना या किसी भी प्रकार से ना तो सहयोग लिया है और ना भविष्य में लेने की योजना है. संस्था केवल आमजन की भागीदारी से संस्था की गतिविधियों को अंजाम तक पहुंचाने में लगी हुई है. अगर आप लोग किसी कंपनी के सीएसआर प्रोजेक्ट से सहयोग दिलवा सकते है तो स्वागत है.

**जितने वाले अलग चीजें नहीं करते, वो चीजों को अलग तरह से करते हैं.**

# अनोखा प्यार

-डा० अरूण कुमार 'आनन्द'
चन्दौसी, जि०-संभल, उ०प्र०

नौकरानी के झाड़ू लगाते समय एक पुराना कागज कचड़े में दिखा. संध्या उठा कर पढ़ी. उसकी आँखे भर आई. लगा कि कोई उसके पुराने घाव को कुरेद दिया है. दर्द से छटपटा गई वह. उसके आँखों के सामने उसका इतिहास का पन्ना पलटने लगा.

उसने विकास को पहली बार देखा था मंजू दीदी के विवाह के समय. मंजू दीदी उसकी पड़ोसन थी. संध्या को कोई भाई-बहिन नहीं था. माँ-बाप की अकेली संतान थी वह.

इसलिए मंजू दीदी से बहुत घुलमिल गई थी. मंजू दीदी उसको बहुत प्यार करती थी. उस समय उसकी उम्र 6–7 वर्ष से अधिक नहीं रही होगी.

रात भर मंजू दीदी के विवाह का कार्यक्रम चलता रहा. सुबह मंजू दीदी की सहेलियाँ विकास से मजाक करने लगीं. वह भी मजाक करने लगी, लेकिन उसका तरीका औरों से भिन्न था. वह कभी चूँटी काटती तो कभी नाक-कान नोचती. विकास जब उब गया उसके मजाक से तो बोला-तुम तो मुझसे बहुत छोटी हो. तुम्हें मजाक नहीं करना चाहिए. वह विकास की गोदी में चढ़ती हुई बोली थी-''छोटी हूँ तो क्या हुआ? आप मेरे जीजी लगेंगे और मैं आपकी साली.''

विदाई के समय वह कार में बैठी मंजू दीदी की गर्दन में लटक कर जोर-जोर से रोने लगी. विकास को यह दर्दनाक दृश्य बर्दास्त नहीं हुआ और उसकी भी आँखे भर आई थीं.

विवाह के बाद विकास जब भी ससुराल जाता तब संध्या से भेंट होती. वह जब तक वहाँ रहता तब तक संध्या उसकी सेवा में लगी रहती. जब वह लौटने लगता तब वह रोने लगती. जब तक विकास दिखाई पड़ता तब तक वह दरवाजे पर बैठी आँसू बहाती रहती. एक बार विकास ने संध्या से पूछा-''मेरे लिए इतना रोती हो. मुझे जाने देना नहीं चाहती हो. तुम्हारा विवाह हो जाएगा तो क्या करोगी? मैं यहाँ आता हूँ तो तुमसे भेंट हो जाती है. विवाह के बाद जब तुम यहाँ आओगी तब मैं नहीं और जब मैं यहाँ आऊँगा तब तुम नहीं.'' संध्या ने कहा था-''विवाह होगा तो अपने बेटे से कहूँगी-जाओ, मौसमी को बुला लाओ. वह जाएगा तो आप चले आइएगा.'' विकास उस 14—15 वर्ष की बालिका के प्रेम पर मुग्ध हो गया था.

एक बार मंजू, विकास और उनका बेटा चिड़ियाघर घूमने जा रहे थे. संध्या भी तैयार हो गई साथ जाने के लिए. सभी चिड़ियाघर घुम लिये, खाये-पीये. संध्या विकास के साथ फोटो खिचवाई. नौका विहार हुआ. लौटने के समय एक ही रिक्शा पर सभी को सवार होना पड़ा. लौटने के समय एक ही रिक्शा पर सभी को सवार होना पड़ा. मंजू ने अपनी गोदी में अपने बेटे को बैठा लिया. फिर भी विकास की गोदी में बैठ गई. रास्ते में विकास ने संध्या से पूछा- ''तुम्हारा विवाह हुआ होता तो तुम्हें मेरी गोद में बैठा देखकर तुम्हारा पति क्या कहता?'' संध्या बोली थी-''कहना क्या? उसके सामने भी आपकी गोदी में बैठकर दिखा दूँगी.

धीरे-धीरे संध्या की उम्र चढ़ने लगी और विकास की उम्र ढलने लगी. संध्या विकास को अब प्यारे कहने लगी और विकास उसको प्यारी. संध्या अपनी हर दुःख तकलीफ विकास को बताने लगी. संध्या का दुःख दूर करने में विकास को सुख मिलने लगा था. किसी बीमारी की दवा हो या कहीं घूमने-फिरने या किसी वस्तु की इच्छा, संध्या निःसंकोच विकास से कहती और विकास उसकी इच्छा पूरी करता. विकास कहीं बाहर जाता तो संध्या के लिए कुछ ना कुछ जरूर ले आता. इसी में उसे सुख का अनुभव होता. एक बार विकास के दिल्ली जाते समय संध्या ने उससे कहा था-''प्यारो लगता है कि मेरे भाग्य में लहँगा पहनना नहीं लिखा है. माँ-बाप खरीदते नहीं हैं. ससुराल जाऊँगी तो साड़ी पहनना पड़ेगा. '' विकास दिल्ली से उसके लिए लहँगा

रात भर मंजू दीदी के विवाह का कार्यक्रम चलता रहा. सुबह मंजू दीदी की सहेलियाँ विकास से मजाक करने लगीं. वह भी मजाक करने लगी, लेकिन उसका तरीका औरों से भिन्न था. वह कभी चूँटी काटती तो कभी नाक-कान नोचती. विकास जब उब गया उसके मजाक से तो बोला-तुम तो मुझसे बहुत छोटी हो. तुम्हें मजाक नहीं करना चाहिए.

ले आया. संध्या खुश होकर बोली थी- ''प्यारे, आज जीवन की सबसे बड़ी इच्छा पूरी की आपने.''

विकास कम्प्यूटर की पढ़ाई कर रहा था. अब उसका मन पढ़ाई में नहीं लग रहा था. हमेशा संध्या के भविष्य के विषय में सोचता रहता-''कैसे रहेगी यह लड़की मेरे बिना. ससुराल में. ''एक दिन उसने अपने मन की बात संध्या को बताई. संध्या स्वयं कम पढ़ी थी लेकिन विकास का हिम्मत बढ़ाते हुए बोली-''हिम्मत कीजिए. मन लगाकर पढ़िए खुब कमाइए और अपनी पढ़ाई की कमाई से मेरे लिए सलमा-सितारा वाली काली साड़ी खरीदकर लाइएगा. आप ठीक से पढ़िएगा तो मेरी भी ईज्जत बढ़ेगी.'' विकास संध्या की खुशी में ही अपनी देखता था. इसलिए वह मन लगाकर पढ़ने लगा था.

संध्या के विवाह के लिए वर की तलाश होने लगी. कोई न कोई कमी दिखाई पड़ जाती संध्या को अपने भावी पति में. वह विकास से अपने मन की बात कहती और विकास उसके पिता से और अंततः उस लड़के को छोड़कर दूसरे वर की खोज होने लगती. उसके पिताजी जब ऊब गये उसके मन पसंद का लड़का खोजते-खोजते तो एक दिन विकास से बोले-''संध्या आप पर विश्वास करती है. इसलिए आप ही उसको समझा सकते हैं. मैं अपने मन से शादी तय करूँगा तो कहेगी कि पिताजी बोझ समझकर 'भाठ' दिये. इसलिए आप समझा बुझाकर किसी तरह विवाह तय करवाइये. आज के समय में लड़की को कम से कम चिट्ठी पढ़ने-लिखने लायक जरूर होना चाहिए. संभव हो तो एक-डेढ़ महीने के लिए अपने घर ले जाइए और कम से कम चिटठी पढ़ने-लिखने योग्य बनाइये.'' विकास ने जब संध्या से अपने घर पढ़ने के लिए चलने को कहा तो वह तैयार हो गई और उसके साथ हजारी बाग जाकर पढ़ने लगी. एक महीने तक कड़ी मेहनत के बाद वह चिटठी पढ़ने लिखने योग्य हो गई तो विकास उसे उसके माँ-बाप के पास पहुँचाकर वापस हजारीबाग चला गया.

कुछ ही दिनों के बाद संध्या के पिता ने विकास को फोन किया-''विकास तय कर दिया हूँ, लेकिन संध्या तैयार नहीं हैं. अनशन की हुई है. आप आकर समझाइए.'' विकास काफी चिन्तित हुआ और संध्या के पास गया. किसी तरह मनाकर अपने हाथों से उसे खाना खिलाया और समझाया- ''माँ-बाप कभी भी अपने संतान का बूरा नहीं चाहते. लड़का बहुत योग्य है. इंजिनियर है. सुखी-सम्पन्न परिवार है. तुम शादी कर लो.'' संध्या रोती हुई बोली थी- ''प्यारे आपको छोड़कर कैसे रहूँगी?'' विकास ने समझाया था- ''विकास भाग्य अच्छा है क्योंकि तुम्हारे जैसी कम पढ़ी-लिखी लड़की को इंजिनियर पति मिल रहा है. समाज का यही नियम है. एक ना एक दिन हर लड़की को अपने पति के घर जाना ही पड़ता है. तुम्हें एक-डेढ़ महीना पढ़ाया था. इस नाते तुम्हारा गुरू हूँ. आज मैं तुम से गुरू-दक्षिणा माँग रहा हूँ. तुम इंकार मत करना.'' संध्या ने पूछा-''क्या गुरू-दक्षिणा दूँ? मेरे पास क्या है?'' विकास ने गुरू-दक्षिणा के रूप में 'अपनी आज्ञा का पालन' माँगा. संध्या गुरू-दक्षिणा के रूप में अपने गुरू की आज्ञा का पालन करने के लिए तैयार हो गई थी. विकास ने आज्ञा देना शुरू किया- ''इस लड़के से विवाह कर लो. विवाह के बाद पति को ईश्वर समझना और सास-ससुर को माँ-बाप. पति और सास ससुर की सेवा करना. उन लोगों की आज्ञा मानना, भले ही उसके लिए तुम्हें अपने माँ-बाप. पति और सास ससुर की सेवा करना. उन लोगों की आज्ञा मानना, भले ही उसके लिए तुम्हें अपने माँ-बाप की आज्ञा ठुकराना पड़े. विवाह के बाद मुझे भूल जाना. भगवान से प्रार्थना करते रहना कि कभी मुझसे मुलाकात न हो. मेरी याद आने वाली किसी भी वस्तु को ससुराल मत ले जाना, जैसे चिड़ियाघर में मेरे साथ खिंचवाया गया फोटो..'' संध्या की आँखों से आँसू टपकने लगे. वह विकास के मुँह पर हाथ रखते हुए बोली-''लगता है कि मुझे काटकर आपसे अलग किया जा रहा है. आपकी सभी बातें मानूँगी लेकिन यह मत कहिये कि आपको भूल जाऊँ. यह नहीं हो सकता.'' विकास ने समझाया- ''मुझे भूल जाओगी तो तुम्हारा जीवन सुखी हो जाएगा, अन्यथा जीवन भर रोती रहोगी मेरी याद करके.'' यह कहकर विकास हाजारी बाग लौट गया था.

एक रात विकास ने अपनी प्यारी से बिछुड़ने का सपना देखा. लगा कि उसका प्राण निकल गया है. वह हड़बड़ा कर उठा और चिल्लाने लगा- ''प्यारी-प्यारी.'' मंजू दौड़ी आई और पूछी तो उसने अपने सपने की बात बतलाई. उसी दिन संध्या के पिता का फोन आया कि संध्या की शादी की तिथि तय हो गई है. मंजू खुशी से पागल हो गई, लेकिन विकास की आखों के आँसू सुखते ही नहीं थे. उसकी नजरों के सामने उसकी प्यारी का मासूम चेहरा नाचने लगा था.

निश्चित समय पर वह सपरिवार अपनी प्यारी के विवाह समारोह में शामिल हुआ. चारों ओर खुशी का माहौल था, लेकिन विकास और संध्या के मुँह पर

उदासी छायी हुई थी. विकास के आँखों से कभी-कभी आँसू टपक जाते थे, इसलिए उसकी उदासी किसी से छुप नहीं पा रही थी.

विवाह की रात विकास अपनी प्यारी के विवाह समारोह की तस्वीरें अपने कैमरे में कैद कर रहा था. जब उसके आँखों से आँसू टपकने लगते तो वह विवाह-मंडप से बाहर जाकर फूट-फूटकर रो लेना और तब वापस आकर फिर फोटोग्राफी करने लगता.

सुबह हुई. वातावरण में विदाई की उदासी घाने लगी. विदाई के समय विकास कार के पास खड़ा था. संध्या को कार पर चढ़ाने के लिए मंजू तथा उसकी सहेलियाँ उसे ले आई. संध्या विकास के गर्दन से लिपटकर फूट-फूटकर रोने लगी. विकास उसको कार पर बैठाते हुए कहा था-''रो मन प्यारी, खुश रहा. स्वर्ग जा रही हो, अपने पति देवता के धर. तुमसे कुछ कहना चाहता था, लेकिन इस भीड़भाड़ में कहने का मौका नहीं मिला. इस कागज में लिख दिया हूँ. जब मौका मिले तो इसे पढ़ा लेना.'' उसके प्यारी को लेकर ससुराल की ओर चल दी थी.

विकास आँसू बहाना तब तक उस कार को निहारता रहा जब तक वह उसके आँखों से ओझल नहीं हो गई थी.

ससुराल में विवाह की व्यस्तता खत्म होते ही संध्या को मौका मिला. वह उस कागज पर लिखी गई अपने प्यारे के मन की बातें पढ़ने लगी-''प्यारी! जब तुम्हारी शादी तय होने का समाचार मिला था, उसी दिन सपना देखा था कि तुम मेरे साथ बाजार में घुम रही हो. वहाँ तुम्हारा होने वाला पति मिलता है. वह तुम्हें अपने साथ चलने के लिए कहता है. तुम मुझे छोड़कर उसके साथ चली जाती हो. मैं तब तक टकटकी लगाए देखता रहता हूँ जब तक तुम और तुम्हारा होने वाला पति मेरे नजरों से ओझल नहीं हो जाते. सपने में तुम्हें तुम्हारे होने वाले पति के साथ जाना देखा तो लगा कि मेरी जान जा रही है. उतना ही दर्द हुआ था जितना किसी के शरीर से प्राण निकलते हुए होता है. तुम मेरी प्राण थी प्यारी, जीने का आधार थी. जाओ तुम अपने घर अपने पति देवता के घर, जहाँ तुम्हारा स्वर्ग है. मैं तो इस मृत्युलोक का प्राणी हूँ. मुझे तो इसी मृत्युलोक में जलकर राख हो जाना है. तुम्हारा स्वर्गलोक तुम्हें मुबारक हो. पतिदेव का सुख तुम्हें मिलता रहे. ईश्वर से तुम्हारे प्यारे, तुम्हारे गुरू की यही प्रार्थना है. जा प्यारी जा. अलविदा.''

अपने प्यारे का संदेश पढ़कर संध्या फूट-फूटकर रोई थी. उस कागज को सम्भाल कर रख दी थी अपने बक्से में. बेचैन हो गई थी वह अपने प्यारे से मिलने के लिए. जब मैके जाती तब विकास से मिलने का प्रयास करती. फोन पर बात करना चाहती लेकिन विकास से कभी बात नहीं हो सकी थी. विकास का अब वहाँ आना-जाना भी बंद हो गया था. उसके पढ़ाई की कमाई से सलमा-सितारा वाली काली साड़ी खरीदवाने का संध्या का सपना पूरा नहीं हो पाया था.

संध्या विकास को दी गई अपने गुरू-दक्षिणा रूपी वचन का पालन करती रही. पति को देवता और सास-ससुर को माँ-बाप मानकर उनकी सेवा करनी रही. समय के दौरान उसे एक कन्या रत्न की प्रप्ति हुई. उसका पालन-पोषण करती रही. उसकी शादी की. समय का मार उसकी स्मृति पर पड़ा और धीरे-धीरे वह अपने प्यारे, अपने गुरू को भूल गई थी.

कल रात को ही वह अपने मैंके से मिला एक पुराना बक्सा खोल कर सामान सहेजी थी. शायद उसी में से यह कागज उड़ गया था और उसकी नौकरानी उसे झाडू से बुहार रही थी. आज कई वर्षो के बाद उसके प्यारे, उसके गुरू की याद ताजा हो गई थी. उसे लगा कि उसके गुरू आदेश दे रहे हैं- ''इस कागज को फाड़ कर फेंक दो.'' इस आदेश का पालन करना उसके लिए बहुत कठिन था क्योंकि यही कागज उसके गुरू की अंतिम निशानी थी. उसने एक कठिन निर्णय लिया और उस कागज को फाड़ने लगी. उस लगा कि वह कागज नहीं अपने दिल में बसे अपने प्यारे, अपने गुरू की अंतिम निशानी उनकी तस्वीर फाड़ रही है. दूर कहीं से लाउडस्पीकर पर किसी सिनेमा का गीत सुनाई पड़ रहा था...''बचपन की मोहब्बत को, दिल से ना जुद करना/जब याद मेरी आये, मिलने की दुआ करना..।

## मुख्य समाचार

अपराधियों के हौसले बुंलद, क्या कर रही है सरकार! हमारी पुलिस! आज एक चलती कार में एक संभ्रात महिला को छेड़ने का दुस्साहस एक अपराधी ने किया. महिला और अपराधी के बीच करीब 20 मिनट तक चले द्वन्द के बाद आखिरकार महिला ने अपराधी (मच्छर) को मार ही डाला. महिला के इस साहसिक कार्य पर सामाजिक संगठनों द्वारा भूरी-भूरी प्रशंसा हो रही है.

-राही अलबेला

कहानी

# ड्राईवर रख ले

-हितेश कुमार शर्मा
बिजनौर, उ.प्र.

आशा अभी-अभी अपने आर्मी से लड़ाई में विकलांग हुए पति की साफ सफाई करके उन्हें कपड़े पहनाकर रसोई में चाय बनाने जा रही थी और मन ही मन बड़बड़ा रही थी कि कब तक यह नरक झेलना पड़ेगा. रोज गन्दे कपड़े बदलना हाथ मुँह धुलाना. पति का सारा काम उनके व्हील चेयर पर बैठे बैठे करने होते थे रोज वही गन्दगी वही बदबू और और वही व्हील चेयर. पति के पुनः ठीक होकर चलने की आशा एक प्रतिशत थी और इसी स्थिति में रहने की सम्भावना 99 प्रतिशत थी. कोई शारीरिक सुख नहीं मानसिक संतोष नहीं एक अन्जानी उथलपुथल मन में हर समय रहती थी. अभी वह चाय बना ही रही थी कि दरवाजे की घन्टी बजी अब पति तो उठ नहीं सकते थे दरवाजा भी उसे ही खोलना था. अतः चाय का पानी बीच में ही रखकर दरवाजे की कुण्डी खोलने के लिए बड़बड़ाती हुई चल पड़ी.

आशा ने कहा अरे तू कहाँ से आ गयी. निलोफर ने कहा दरवाजे में ही बात करेगी. आशा ने कहा आजा आजा तूझे बहुत दिन बाद देखा तो मैं स्तब्ध हो गयी.
आशा ने निलोफर को लेकंर वही आ गयी जहाँ उसके विकलांग पति एक खटोले पर बैठे हुए थे.

दरवाजे की कुण्डी खोलकर देखा तो उसकी एक समय की सहपाठी निलोपफर खड़ी थी. आशा ने कहा अरे तू कहाँ से आ गयी. निलोफर ने कहा दरवाजे में ही बात करेगी या अन्दर भी आने देगी.

आशा ने कहा आजा आजा तूझे बहुत दिन बाद देखा तो मैं स्तब्ध हो गयी.

आशा ने निलोफर को लेकर वही आ गयी जहाँ उसके विकलांग पति एक खटोले पर बैठे हुए थे और बोली हैरान मत होना यह मेरी सहपाठनी निलोफर है. कभी हम साथ पढ़ते थे आज बहुत दिन बाद आई है. आप इससे बात करो इतने मैं चाय बनाकर लाती हूँ.

आशा यह कहकर चाय बनाने चली गयी. निलोफर ने आशा के पति से पूछा यह कैसे हुआ आपके पैर कैसे कट गये.

आशा के पति ने बताया कि लड़ाई के दौरान एक छिपे हुए बम के ऊपर पैर पड़ गया. उससे मेरे दोनों पॉव घुटने तक चिथड़े चिथड़े हो गये. अब मैं क्या करूँ आशा के सहारे जी रहा हूँ. निलोपफर ने पूँछा सरकार ने क्या दिया. आशा के पति ने कहा 45 लाख तो मुआवजा दिया और 50 हजार रुपये पेंशन दे रही है तथा 10 हजार रुपये महीना बीमारी और देखभाल के दे रही है. और ....

बीच में ही आकर आशा बोली बस पहले चाय पीलो फिर बात करना.

तीनों ने चाय पीनी शुरू की चाय पीते पीते ही सारी बात हो गयी.

आशा ने बताया जिस खटोले पर यह बैठे है उसमें पहिये लगवा दिये है अतः यह सारे आंगन में कमरे में उसी के सहारे घूमते फिरते है.

कोई भी नर्स 10 हजार में सारे दिन काम करने को तैयार नहीं है. अतः सारा काम मुझे ही करना पड़ता है. काम करने में...

बीच में ही आशा के पति बोल उठे निलोफर जी अगर आशा ना होती तो मेरा बचना मुश्किल था. रीढ़ की हड्डी में चोट लगने से मैं बिलकुल लाचार हो गया हूँ. शरीर मेरे नियंत्रण में नहीं है. लेकिन...

बीच में ही आशा ने कहा अरे छोड़िये इन बातों को हाँ री निलोफर तू बता स्पेन से कब आई. क्योंकि मैंने सुना था कि तू अपने पति के साथ स्पेन चली गयी है.

निलोफर ने कहा कि कल ही तो आई हूँ. तो सबसे पहले तेरी याद आई तेरे पास आ गयी. अब दो तीन दिन रूकूगी और भी एक दो सहेलियों से मिलूगी. तुझे याद है हमारे साथ एक ईसाई लड़की पढ़ती थी क्या नाम था उसका डीसिल्वा सुना है उसका भी पति दुर्घटना ग्रस्त हो गया है और वह भी कुछ दुखी है.

आशा ने कहा कब जायेगी.

निलोफर ने कहा तू चले तो अभी चलूँ. आशा ने अपने पति से पूँछा आप अगर कहे तो मैं एक दो घण्टे के लिए इसके साथ चली जाऊँ.

सामने वाली आन्टी से कह दूँगी. वह आपके पास आकर बैठ जायेगी.

आशा के पति ने कहा ठीक है हो आओ.

आशा ने सामने वाली आन्टी से जा कर कहा कि कृपा करके आप दो घण्टे का समय दे दीजिए. मेरी एक सहेली बहुत दिनों बाद आई है. मैं उसके साथ एक तीसरी सहेली को देखने जाना चाहती हूँ. आन्टी उसके साथ चली आई और आशा के पति के पास आकर कुर्सी डालकर बैठ गयी.

आशा जल्दी जल्दी तैयार होकर निलोफर के साथ चली गयी. डीसिल्वा का घर ज्यादा दूर नहीं था लगभग 15 मिनट में वह दोनों डीसिल्वा के घर पहुँच गयी. डीसिल्वा दोनों को देखकर बहुत खुश हुई और अन्दर लेकर उन्हें अपने पति के पास ले गयी. जो व्हील चेयर पर बैठे हुए थे.

और जाकर दोनों का परिचय अपने पति से कराया. और बाद में बोली बैठ जाओं चाय बनाकर लाती हूँ. दोनों ने कहा हम तो चाय पी कर आये है. हम तो केवल हालचाल देखने आये थे.

डीसिल्वा ने कहा हालचाल भी देख लेना बात चीत भी कर लेना मगर चाय पीनी पड़ेगी. यह कहकर डीसिल्वा चाय बनाने चली गयी. निलोफर ने डीसिल्वा के पति से पूँछा यह कैसे हुआ. डीसिल्वा के पति ने बताया कि वह रेलवे में इंजीनियर रहे तीन महीने पहले एक बार यार्ड में घूमते हुए उनका पैर पट्री बदलने वाले हुक में फँस गया. मौड़ होने के कारण आने वाली ट्रेन के ड्राईवर को मैं दिखाई नहीं दिया. और तेज गति से आती हुई ट्रेन ने मेरे दोनों पैर उड़ा दिये. लाईनमैंन देख रहा था वो जल्दी से आया और मुझे रेलवे के अस्पताल में ले गया. वहाँ मुझे वेहोश करने के बाद टाके लगाये गये. लेकिन एक पैर घुटने तक और एक पैर घुटने से ऊपर साफ हो गया था. होश में आने के बाद न जीने को मन करा था और न मर सकता था. निलोफर ने पूँछा रेलवे ने मुआवजा दिया होगा.

डीसिल्वा के पति ने कहा हाँ 50 लाख रुपया मुआवजे का दिया गया और जिन्दगी भर रहने के लिए यह क्वार्टर दिया गया. 50 लाख हमने बैंक में जमा कर दिये. कुछ उसका ब्याज आता है और कुछ पेंशन मिलती है खर्चा चल जाता है. लेकिन...

डीसिल्वा ने कहा बस अब बात चीत बन्द पहले चाय और तीनों ने चाय पीनी शुरू कर दी. डीसिल्वा ने कहा आगे की बात मैं बताती हूँ. शुरू में जीवन का कोई सुख दिखाई नहीं दे रहा था. खाली पैसा क्या कर सकता है. मानसिक और शारीरिक कोई संतुष्टि उपलब्ध नहीं थी. मैं एक दिन बहुत परेशान थी और जीवन समाप्त करना चाहती थी लेकिन यह सोचती थी कि इनका क्या होगा इन्हें कौन देखेगा. बच्चे है नही रिश्तेदार कब तक रहेगे. इसी पशोपेशे में मैं घर से निकल गयी और चलते चलते यमुना जी के पुल पर पहुँच गयी. सोच रही थी छलांग लगा दूँ. इतनी देर में पुल के ऊपर रेल की गाड़ी आने की आवाज सुनाई दी. मैं झपट के पुल से उतरी और ढ़लांग पर पैर फिसल गया लुड़कती फुड़कती जमुना जी में जा गिरी. पानी में डुबकियाँ खाने लगी. इतने में ही एक नौजवान पानी में कूदा और उसने मुझे पानी से निकाल लिया. थोड़ी देर में मुझे होंश आया तो उस नौजवान ने पूँछा तुम क्या मरने आई थी मैंने कहा हाँ उसने पूँछा मरना क्यों चाहती हो. मैंने अपनी सारी कथा सुनाई और अचानक मैंने उस से पूँछा तुम यहाँ क्यों आये थे. उसने कहा बेरोजगार हूँ परिवार में कोई नही है दो दिन से काम नहीं मिला तो टहलते टहलते


## क्या आप लिखते हैं?

अपने काव्य संग्रह, कहानी संग्रह, आलेख संग्रह इत्यादि के प्रकाशन हेतु संपर्क करें।

**विशेष आकर्षण**

**1.प्रकाशन मात्र लागत मूल्य पर**
**2. बिक्री की व्यवस्था**
**3.प्रचार-प्रसार की व्यवस्था**
**4.विमोचन की व्यवस्था**
**5. ऑन लाईन/ऑफ लाइन संस्करण में पुस्तक का प्रकाशन**

विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें:
**प्रसार सचिव,** विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान, एल.आई.जी-93, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद-211011
ई-मेल: sahityaseva@rediffmail.com

चला आया. यहाँ देखा तुम पुल के ऊपर हो गाड़ी आ रही है तुम भागकर पुल से नीचे उतरी और जमुना जी में जा गिरी. किसी ने मुझसे कहा इसे बचाओ मैं तुम्हें बचाने के लिए कूद पड़ा तुम बच गयी. डीसिल्वा ने कहा आप क्या काम कर सकते हो. नौजवान ने कहा है मेरा नाम हिम्मत सिंह है मैं ड्राईवर हूँ. डीसिल्वा बोलती जा रही थी कि मैं उसको लेकर घर आ गयी. यहाँ अपने पति के पास उसे लेकर आई और मैंने उनसे कहा आज इस नौजवान ने मुझे बचा लिया. वरना मैं जमुना जी में डूब जाती. तब...

डीसिल्वा के पति बोले अब मैं सुनाऊँगा. मैंने उस नौजवान से पूँछा तुम क्या करते हो. नौजवान ने कहा मैं ड्राईवर हूँ मगर बेरोजगार हूँ. बीच में ही डीसिल्वा बोली मैने सोचा कि अगर हम एक गाड़ी खरीद ले और इसको ड्राईवर रख ले तो घूमने फिरने में आसानी रहेगी और यह इनको उठाने बैठाने में भी मेरी मद्‌द कर दिया करेगा. आपस में बातचीत हुई नौजवान ने कहा मैं आप पर बोझ नहीं बन सकता. आप गाड़ी खरीदे मैं उसे टैक्सी में चलाऊँगा. और आमदनी आपको दूँगा. मेरा खाना खर्चा आप करेगे मैं यही रह जाऊँगा. डीसिल्वा बोली इस प्रकार वह नौजवान हमारी गाड़ी को टैक्सी में चलाने लगा और हमारे पास रहने लगा. समय के साथ साथ वह घर के परिवार जैसा हो गया. तब से जीवन में कुछ जीने की लालसा पैदा हुई. जब हमें जरूरत होती है तो गाड़ी में हम दोनों उसके साथ जाते है और रेलवे के गेस्टहाउस में टहरते है वही रियायती दर पर खाना मिलता है घूम फिर कर लौट आते है.

निलोफर ने कहा तुमने ठीक किया. बस हम अब चलते है यह कहकर निलोफर और आशा दोनों खड़ी हो गयी. डीसिल्वा ने कहा और बैठो निलोफर ने कहा नही इसे भी जाना है और मुझे भी जाना है अवसर मिला तो फिर आयेगे. डीसिल्वा दोनों को दरवाजे तक छोड़ने आई. चलते चलते निलोफर ने कहा ड्राईवर ठीक काम कर रहा है और डीसिल्वा का हाथ दवाकर बोली अब तो तुझे मानसिक और शारीरिक संतुष्टि मिल रही है. यह कह कर डीसिल्वा की तरफ एक आँख दबाकर मुस्कुरा दी डीसिल्वा ने भी मुस्कुरा कर हाँ कह दी. रास्ते में निलोफर ने आशा से कहा कुछ सुना कुछ समझा जिन्दगी को रो रो कर काटने की बजाय हंसकर गुजारना सीख पैसे की कमी नहीं है. तू भी गाड़ी खरीद ले और ड्राईवर रख ले. यह कहकर निलोफर ने आशा को आँख दबाकर वहीं इशारा किया जो डीसिल्वा को किया था.

कालान्तर में आशा ने वही किया जो निलोफर ने कहा था जो डीसिल्वा ने किया था. और इस प्रकार आशा की निराश जिन्दगी में आशाओं के फूल खिल गये.


1996 से त्रैमासिक एवं 2001 से मासिक के रूप में निरन्तर प्रकाशित

कल, आज और कल भी बहुपयोगी

**विश्व स्नेह समाज**

**हिन्दी मासिक**

एक प्रति–15 / रुपये,
वार्षिक–150 / रुपये,
पंचवर्षीय–750 / रुपये,
आजीवन–1500 / रुपये, संरक्षकः 11000 / रुपये

खाता संख्या–66600200000154, आईएफएससी कोड–बीएआरबी0वीजेपीआरईई (BARB0VJPREE (0-ZERO)
सीधे खाते में जमा, आरटीजीएस, नेफ्ट, ऑन लाइन स्थानान्तरण कर, जमा पर्ची की कापी व पत्र व्यवहार का पता ई–मेल या ह्वाट्सएप कर देवें।

पताः एल.आई.जी–93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद–211011, मो0: 9335155949, ई–मेल: vsnehsamaj@rediffmail.com

## माँ

ममता का बंधन
जड़ से तना है
गंगा सा पावन
ये रिश्ता बना है
लगता है सूना
दुनिया का मेला
जग है वही पर,
मन है अकेला
माँ की ही यादों से
बचपन सूना हैं
बिना माँ के जीवन भी
लगता सूना हैं
सूनी है डेहरी बाबुल की
अकेले हैं जन्मदाता
बिन माँ के लगता है,
अधूरा-सूना सूना सा मेरा
बैठे कहां किसके पास
नहीं है कोई ठिकाना
रोने को न मिलता,
अब कोई बहाना
खोकर भी माँ को
मन खोया न माने
दिल इस हकीकत को
न जाने क्यूँ न माने।

-संगीता शर्मा
शाहगंज, आगरा, उ०प्र०

## दिन कैसे बदलेगी

मोक्ष की मजबूरी,
ष्मषान घाटों पर प्रहार,
ऐ कैसा है मंजर हैं?
क्यों ईष्वर ने हमें ,
दिया यह संताप।
क्या हुईं हमसे भूल?
क्यों न संभले हम ?
आखिर क्यों हमने,
नहीं सीखा कुछ प्रकृति से,
क्यों? आखिर क्यों?
कोई बतलाए तो मुझे,
क्या गलती की मैंने?
क्यों हुई यह तबाही?
कोई तो बताए मुझे।
अब भी देरी नहीं,
हुई है खूब।
हमें संभल कर फिर,
जिन्दगी सवारनी है।
जिन्दगी को जिन्दगी,
फिर से बनानी है।
हमें अपनों में अपनों को,
खोजने की ,
जरूरत है।
यही हमें स्वस्थ सुंदर,
संरक्षित और सुरक्षित बनाएंगी।
सुन,मत आपस में झगड,
रहें मिल कर हम सब,
नई दुनिया अब,
हम सबों को ,
यहां बनानी है।
जहां अमन होगी,
चौन भी होगी,
षान्ति भी और उमंग भी,
ठहाके भी और अठखेलियां भी,
मित्रता व अपनेपन का,
भी भाव होगा ।
जिन्दगी में जिन्दगी ही,
देगी एक आगाज।
मत संताप कर,रो भी मत,
यही तो जिन्दगी का ,
एक दस्तूर है।
फिर बहारें आएगी,
गुलषन में फूलों पर,
षबनम के छींटें,
पड़ेगी।
फूलों से खुषबू फैलेगी,
बहारें आएगी,चमन गुलजार होगा,
वादियों में चहल-पहल बढ़ेगी।
एक खुषनुमा संसार,
फिर नया कायनात बनाएगी।
पक्षियों की सुनहरी आवाजे,
हमें सुनाई देगी,
झरनों का कलरव,
मन को मोहित करेगा।
आसमां में नये,
सितारे दिखेंगे।
नई रौषनी से,
एक नई दुनिया फिर,
जन्म लेगी जहां केवल बस केवल,
खुषियां ही खुषियां होगी।

-डॉ० अशोक कुमार शर्मा,
पटना, बिहार

## माँ..

रोग निवारण मंत्र है माँ........
मेरा सुरक्षा तंत्र है माँ........
जिसकी गोद में सर रखकर,
प्राणवायु मिल जाती हो,
सब पर भारी, सबसे प्यारा,
चिकित्सीय वो, संयंत्र है माँ......
विपदाओं का अंत है माँ........
शिव शंकर सी अनंत है माँ......
जिसके मंत्रोजाप से ही,
काल दूर हो जाता हो,
ऐसी सच्ची साधू संत है माँ......
गीत का मोहक बंद है माँ.....
एक अनूठा छंद है माँ .......
जिसकी छाया में आकर,
मिटता हो काला साया,
वो महा मृत्युंजय मंत्र है माँ ....

श्रीमती वन्दना श्रीवास्तव 'वान्या'
लखनऊ, उ.प्र.

# रो पड़ा हिमालय

डाक्टर भी है कुछ थके थके नर्से भी है कुछ थकी थकी
तीमारदार जितने भी है सब की सांसे है रूकी रूकी
आक्सीजन खत्म हो गई तो जीवन में व्यापेगा कलेश

कालाबाजरी जारी है यह बहुत बड़ी बीमारी है
इस घोर संक्रमण के युग में शैतान बना व्यापारी है
कर रहा राजनीति विपक्ष हाँ मद्द कर रहा है विदेश

बीमार पड़ा दरवाजे पर है बैड नहीं कोई खाली
सब उजड़ गया सब बिखर गया बगीया से बिछड़ गया माली
अब तक देखा ना सुना कभी मृत्यु का ऐसा क्रूर वेश

माता की ममता विलक उठी गोदी में शांत हुआ बेटा
फिर अचक अचानक चीख उठा जो था मरीज भू पर लेटा
यह क्रूर कोरोना निगल रहा हो भले भिखारी या नरेश

रो पड़ा हिमालय भी विव्हल गंगा में बहती लाश देख
शव बहा दिये मजबूरी में सीने में अपने गाढ़ मेख
कैसे कब तक रूक पायेगा कोरोना का बढ़ता प्रवेश

सारा परिवार संक्रमित है इसकी उसकी ले सुधि कौन
लॉकडाउन में आना जाना है बन्द सभी रो रहे मौन
पीड़ा को व्यक्त करें कैसे अब नही बची है यह अशेष

साम्रगी खत्म हुई सारी तर्पण को बचे नही तिल जौ
घर का कोई उपलब्ध नही अब क्रियाकपाल करेगा कौ
सब हैं हताश सब हैं निराश कैसे धीरज रक्खे हितेश

-हितेष कुमार शर्मा, बिजनौर, उ.प्र.

# माँ की गुहार

कैसे हो?
बता दिया करो.
कुछ महसूस हो
तो जता दिया करो
कुछ दूरी घटा दिया करो
औरों के लिए खूब किया करो।

हमें बस अपनों में
गिन लिया करो।
यहां ठंड बहुत है,
थोड़ी गर्म चाय तुम पी लिया करो।
माना, हमारी बातें कुछ बेतुकी सी है

तुम बस सुन लिया करो
याद जब भी आए हम,
बस अपनों में गिन लिया करो।
कैसे हो?
सिर्फ कभी कभी बता दिया करो।

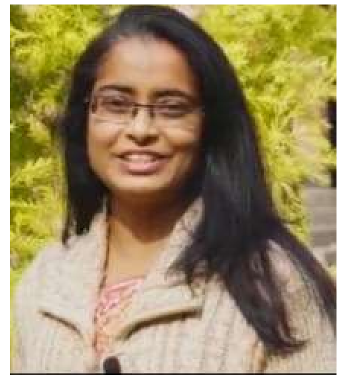

-अनन्या राय, शिलांग,
मेघालय

# कुंडलिया

पड़ोस की सास-बहू को
रोज झगड़ते पाया
दो देवियों के महायुद्ध में
बेचारे पति को सदा
बेबस पाया।
मेरे ब्याह का पैगाम आया
सुखद मुसीबत देख
मेरे मन में ख्याल आया
पति-पत्नी तो रोज ही झगड़ते है लेकिन
हो ही जाता है
इसलिए मैंने सासूमाता से
मैने कहलाया
हमारी कुण्डलियां
नहीं मिलवाओ
मिलवानी ही है तो
सास-बहू के
गण मिलवाओ
अपने परिवार को
सुखी बनाओ

-डॉ० जेबा रसीद,
जोधपुर, बिहार

## नारी

नव सृजन की संवृद्धि की एक शक्ति है नारी
परमात्मा औ'' प्रकृति की अभिव्यक्ति है नारी
परिवार की है प्रेरणा, जीवन का उत्स है
हे प्रीति की प्रतिमूर्ति सहन शक्ति है नारी
ममता है माँ की, साधना, श्रद्धा का रूप है
लक्ष्मी, कभी सरस्वती, दुर्गा अनूप है
कोमल है फूल सी, कड़ी चट्टान सी भी है
आवेश, स्नेह, भावना, अनुरक्ति है नारी
सहधर्मिणी, सहकर्मिणी सहगामिनी भी है
है कामना भी कामिनी भी, स्वामिनी भी है
संस्कृति का है आधार, हृदय की पुकार है
सावन की सी फुहार है, आसक्ति है नारी
नारी से ही संसार ये, संसार बना है
जीवन में रस औ'' रंग का आधार बना है
नारी हे धरा, चाँदनी अभिसार प्यार भी
पर वस्तु नहीं एक पूर्ण व्यक्ति है नारी

&प्रो० सी० बी० श्रीवास्तव 'विदग्ध''
जबलपुर, म०प्र०

## दिल मचलता रहा

दिल मचलता रहा, ख्वाब पलता रहा
मन मसोसे महज हाथ मलता रहा
मैं समझता रहा, वो समझती नहीं
समझ, नासमझ, खेल चलता रहा
ख्वाहिशे ताउस बंदिशो में रही
बेरूखी देख, दिल जलता रहा
रिश्तों की ठंड़क ऐसी के जैसे
बर्फ का कोई टुकड़ा गलता रहा
एक नई गर्म जोशी की चाह में
फैसला दिन ब दिन बस टलता रहा
हाथ में हाथ डाले, घूमें मगर
कह सके कुछ नहीं, यूं ही चलता रहा
दिल से थामा था, साथ उनका
इसलिये बस इसलिये साथ चलता रहा

-विवेक रंजन श्रीवास्तव
जबलपुर, म०प्र०

## बाल दोहा

व्यक्ति थकन को भूलकर, पूरा करे प्रयास।
चलकर आता लक्ष्य ही, स्वयं उसी के पास।।
बच्चे जो श्रम लगन से, करते अच्छे काम।
पुरस्कार पाते सदा, होता ऊँचा नाम।।
सेवा करना बड़ों की, देना है सम्मान।
आती है अनुकूलता, पथ होगा आसान।।
वृक्षों से हमकों मिलें, उपयोगी फल फूल।
उनका कटना है दुखद, समझे अपनी भूल।।
लगते सुन्दर वृक्ष है, ईश्वर के वरदान।
होता इनके पास है, सुखद शान्ति का भान।।
खुशियों के पीछे दिखे, श्रम साहस संघर्ष।
इनसे ही मिलता रहा, जीवन में उत्कर्ष।।
वह पीपल जामुन सुखद, कटे आम के बाग।
वायु प्रदूषित हो रही, बरष रही है आग।।
लाद किताबें पीठ पर, बच्चे हैं हैरान।
बचपन की सब छीन ली, हमने ही मुस्कान।।
बाधाओं की धैर्य से, कर लेता जो पार।
मंजिल पाता है वही, नहीं मानता हार।।
लगते थे कितने सुखद, बचपन के सब खेल।
मोबाइल के सामने, आज सभी है फेल।।
मीठा कोयल बोलती, गाते भौंरे गीत।
चिड़ियों का कलरव सुखद, लगता है संगीत।।
श्रम निष्ठा साहस लगन, नैतिकता ईमान।
गुरुओं का आदर सदा, उठने के सोपान।।
दादाजी जब ठंड में, लेते जला अलाव।
पास बैठ सब सुन रहे, किस्सा आदर भाव।।
यदि संभव घर पर रहें, भीड़ भाड़ से दूर।
कोरोना गंभीर है, मुख पर मास्क जरूर।।
सदा आश विश्वास से, करते रहें प्रयास।
तब कहती है सफलता, आती हूँ मैं पास।।
अन्धकार से क्यों डरें, दीपक अपने पास।
किरण एक प्रकाश की, करती रहे उजास।।

-कैलाश त्रिपाठी,
शिवकुटी, आर्यनगर, अजीतमल, औरैया, उ.प्र.

# इच्छा शक्ति

हवाओं का रूख इतना तेज था मानो सबकुद अपने साथ ही उड़ा ले जाएगी. सर्दियों की रातें दिन पर दिन सर्द होती जा रही थी. रोज़ ये हवाएँ सरू को बेहद शीतलता देती थी. मगर आज, आज जाने क्यों इन हवाओं को इतनी तपिश थी जो कि सरू को जलाकर राख कर देने के लिए तत्पर थी. वह एक हॉस्पीटल के कोने में रखी बैंच पर सिमटी सी बैठी टकटकी लगाए मध्यम गति से जल रहे उस बल्ब को देखे जा रही थी जो लगातार अपना प्रकाश चारों ओर फेंक रहा था. उसकी आँखों से अविरल अश्रु धारा बह रही थी. अचानक उसे स्मरण हो आए अपने बचपन के दिन और अपने पिता मास्टर स्वामीनाथ जी के साथ बिताया वह वक्त वह बचपन जो उसके लिए जीवन की एक स्वर्णिम यादें था.

स्वामीनाथ जी एक सरकारी स्कूल में अध्यापन का कार्य करते थे. उनके तीन बेटियाँ और एक बेटा था. वह स्वभाव से नेक दिल, सहृदय दया का सागर थे मानो ईश्वर ने उनकी रचना स्वयं अपने हाथों से की हो. नाराज़गी क्या होती है यह तो वह जानते तक न थे। अपने बच्चों से दुलार तो वह खुद से भी ज्यादा करते थे. उनकी जरा सी परेशानी में वह बेतहाशा परेशान हो उठते अपनी बेटियों पर उन्हें नाज था वह सदैव यही कहते ये चार बच्चे मेरी चार भुजाएं है. कितना प्यार था उन्हें अपने बच्चों से और ऐसा नहीं कि यह प्यार सिर्फ उनके अपने बच्चों के लिए ही उनके हृदय में था वे सभी को समान प्यार और दुलार देते. उन्होने अपने जीवन में कभी किसी गलत शौक को नहीं अपनाया, बस दिन रात अध्ययन में जुटें रहना ज्ञान अर्जित करना और ज्ञान बाँटना बस यही एक शौक था उनका. इंसान तो क्या पशु पक्षी को भी पीड़ा में देखकर उनका दिल तड़प उठता. यकीनन महान व्यक्तित्व के स्वामी थे वे. सन्तो जैसे महान व्यक्तित्व का धनी व्यक्ति आज कितना निःसहाय और बेबस बना ज़मीन पर पड़ा अपने जीवन की अंतिम सांसे गिन रहा था. उनकी सांसे मानो थम सी चुकी थी, आंखों की पुतलियाँ स्थिर हो गई थी बोलने सुनने की शक्ति क्षीण हो चुकी थी जैसे मौत दरवाजे पर दस्तक दे चुकी थी.

**स्वामीनाथ जी एक सरकारी स्कूल में अध्यापन करते थे. उनके तीन बेटियाँ और एक बेटा. वह स्वभाव से नेक दिल, सहृदय दया का सागर थे मानो ईश्वर ने उनकी रचना स्वयं अपने हाथों से की हो. नाराज़गी क्या होती है यह तो वह जानते तक न थे.**

जिस समय मास्टर जी कि यह हालत हुई उस समय उनके घर में कितना खुशहाल माहौल था. अपने इकलौते बेटे की विवाह की तैयारियों में कितने खुश थे वह आज उनके वर्षों का सजोया सपना जो पूंरा होने जा रहा था. बेटे के विवाह में मात्र दो दिन शेष थे घर में मेहमानों का ताता सा लगने लगा था. विवाह की तैयारियों का हर काम वह स्वयं अपने ही हाथों से करना चाहते थे. वह इन तैयारियों में पूरी तरह से व्यस्त ही थे कि अचानक सुबह-सुबह उनके सीने में अथाह पीड़ा होने लगी. दर्द था कि रूकने का नाम ही नही ले रहा था फिर क्या था यह पीड़ा हर पल बड़ती ही गई. कुछ देर तो वह उसे सहते रहे लेकिन जब यह पीड़ा असहनीय हो गई तो वह जमीन पर गिरकर बच्चों की भाँति उस अथाह पीड़ा से छटपटाने लगे. घर के सभी सदस्य उनकी यह दशा देख बेचैन हो उठे. उनकी बिगड़ती हालत को देखते हुए उन्हे शीघ्र ही एक नर्सिंग होम में भर्ती करवाया गया जहाँ पहुँचकर पता चला कि उन्हे दिल का दौरा पड़ा है. हालत उनकी इतनी नाजुक थी कि डॉक्टरों ने यह कहकर उन्हे एडमिट करने से इंकार कर दिया कि हमारे यहाँ पूरी सुविधाएँ उपलब्ध नहीं है इन्हें कहीं और ले जाए उन्हे एम्बूलेंस से शीघ्र ही नजदीक के दूसरे अस्पताल में ले जाया गया वहाँ पर डाक्टरों द्वारा उनका चेकअप करने पर पता चला कि उनकी हालत ज्यादा ही नाजुक है और ऐसे में कुदरत का कोई करिशमा ही उनके प्राणों की रक्षा कर सकता है. यहाँ

तक कि डॉक्टरों ने तो दूर के सभी रिश्तेदारो को भी बुला लेने की सलाह दी. परिवारजनों के लिए तो यह खबर किसी वज्रपात से कम न थी. परिवार के सदस्यों का तो जैसे एक क्षण में सबकुछ लुट गया था.

आज वह यह नही समझ पा रहे थे कि भगवान भला इतना निष्ठुर कैसे हो सकता है. किसी के लिए सजा कुकर्रर करने से पहले वह यह क्यों नहीं सोचता कि आखिर इसमें उस अभागे का कसूर क्या है. क्या उसका सिर्फ यही कसूर हैं कि उसने जीवन पर्यन्त स्वंय को कष्ट देकर भी दूसरों को पल दो पल की खुशियाँ देनी चाही है. स्वंय दुख झेलकर भी दूसरों को सुखी देखना चाहा है. सच ही तो है बस यही आकर मनुष्य कुदरत के फैसले के आगे हार मान जाता है. और सिर्फ मौन बना उस ऊपर वाले की करीगरी को देखता रहा जाता है. एक क्षण के भीतर ही मास्टर स्वामीनाथ जी का घर खुशियों की जगह ग़म में तब्दीज हो गया. आज मास्टर जी अस्पताल के आई.सी.यू. में एक बैड पर लेटे एकटक उस दरवाजे को देखे जा रहे थे जो कभी डाक्टरों तो कभी आगन्तुकों के आने से खुलता और बन्द होता. फिर क्या क्या था, उस कमरे को देखते-देखते उनकी आँखें भर आई और एक बार जो अश्रुधरा बही तो रूकने का नाम ही नहीं ले रही थी जीवन की विकट से विकट परिस्थिति में भी हार न मानने वाले मास्टर जी आज कितने निस्सहाय थे. उनके सपने आज बिखर गए थे. एक पिता के लिए अपने इकलौते पुत्र को दूल्हा बना ने देख पाना अत्यन्त कष्टकारी होता है. लेकिन अगले ही पल उनकी आँखों में एक चमक सी जाग उठी, एक विश्वास स्पष्ट दिखाई दे रहा था बेटे के विवाह में पहुँचने का. बेहद स्नेह जो था उन्हे उससे. आखिर दो दिन ऐसी ही कठिनाई में व्यतीत हुए और फिर वह दिन भी आया जब बेटे का विवाह था. एक तरफ घर में शहनाई बच रही थी तो दूसरी तरफ पिता जिन्दगी से लड़ रहे थे. परिवार के लिए यह स्थिति बेहद कष्टकारी थी. आज मास्टर जी की बेटी अपने पिता को ऐसे बहलाने का प्रयास कर रही थी जैसे कभी बचपन में उसके रूठ जाने पर वह उसे मनाया करते थे. वह पिता से बोली ''पापा आप बिल्कुल चिन्ता मत करो विवाह में तो अभी दो दिन और शेष है'' तब तक तो हम घर भी पहुँच जाएगे. उसे लगा कि उन्हें क्या पता चलेगा इस बंद कमरे में कि उन्हें कितने दिन व्यतीत हुए है यहाँ लाए हुए. लेकिन वह यह भूल रही थी जिस पिता को वह समझाने की कोशिश कर रही है उसी पिता ने दुनियादारी की समझ दी थी. उगली पकड़ कर चलना सिखाया था. आखिर विवाह का दिन आ ही गया. और लाख उनसे छुपाने पर भी पिता हृदय यह जान ही गया. कि यह वह दिन है जिसका उन्होंने वर्षो इन्तजार किया था. पुत्र को विवाह के जोड़े में देखना उनकी दिली तमन्ना थी.

और इसी खुशी से विधाता ने उन्हें वंचित कर दिया था. डॉक्टरो का कहना था कि इतनी खुशी एकदम उनका दिल बर्दाशत नहीं कर पाएगा. अचानक कमरे में डॉक्टर ने प्रवेश किया और मास्टर जी के पास आकर बोले 'कहिए अब कैसा महसूस कर रहे है तभी मास्टर जी ने डाक्टर का हाथ पकड़ लिया और फूटफूट कर रो पड़े और फिर दोनों हाथ जोड़कर बोले' मुझे आज सिर्फ एक घण्टे के लिए अपने बच्चे के विवाह में जाने दीजिए इसके बदले में यदि आप मुझे दस दिन भी अस्पताल में रहने की कहेंगे तो मैं खुशी-खुशी मान जाऊँगा. बस डाक्टर साहब मुझे एक घण्टे की छुट्टी दे दो आप चाहो तो मेरे साथ एक नर्स भेज दो मैं एबूलेंस से पैर भी नीचे न रखूँगा बस बेटे को दूल्हा बना देखने दो-बस एक बार डाक्टर साहब यह कहते-कहते वह हिचकियों से रो पड़े. चेहरे पर दीनता और आँखों में बेबसी स्पष्ट दिखाई दे रही थी. उन्हें उम्मीद थी कि डॉक्टर शायद उनपर तरस खाकर उन्हे विवाह में शामिल होने की अनुमति दे देंगे लेकिन ऐसा न हुआ. डॉक्टर ने असहमति जाहिर करते हुए इंकार कर दिया. वह अपलक डॉक्टर को देखते रहे उम्र का तकाजा था या फिर आँखों की नमी की डॉक्टर का चेहरा उन्हे कुछ धुंधला सा दिखाई देने लगा और वह वृक्ष से टूटी हुई टहनी की तरह गिर पड़े. अब तो न कुछ कहने को शेष था और न ही सुनने को. उस वक्त की स्थिति का बया करने में शायद हमारी लेखनी भी कमजोर पड़ गया. कितना हृदय विदारक था वह दृश्य जिसे देखकर पत्थर से पत्थर दिल भी रो जाए. उनकी इस दशा पर शायद प्रकृति भी

आँसू बहा रही थी तभी तो सरू के दरवाजे पर लगे.

आखिर बिना पिता की मौजूदगी के ही विवाह की सभी रस्में अदा की गई. जीवन भर सीना तान कर चलने वाला और कठिन से कठिन परिस्थिति में भी कभी न घबराने वाला व्यक्ति आज खुद को बेसहरा पा रहा था लेकिन मन में दृढ़ विश्वास था घर सही होकर वापिस जाने का क्योंकि उन्हें जीना था परिवार के लिए अपनों के लिए अपनी पत्नी के लिए. इसी दृढ़ विश्वास और मजबूत इरादे के आगे आज उनके आगे मौत को भी अपना सर झुकाना पड़ा था. मास्टर जी की इच्छा शक्ति के आगे मौत भी हार गई थी.

सरू की तंद्रा भंग हुई जब किसी ने पीछे से आकर उसकी पीठ पर हाथ रखा उसने पीछे मुड़कर देखा तो डॉक्टर खड़े थे. उन्होंने बड़े ही अपनत्व भरे लहजे से कहा तुम्हारे पिता अब खतरे से बाहर है. इतना सुनते ही वह फूट फूटकर रो पड़ी और रोते-रोते वह डॉक्टर के चरणों में बैठ गई उसकी आंखों से अश्रुधारा बह रही थी, वह मुँह से एक शब्द भी न बोल सकी इतना साहस ही कहाँ शेष था उसमें. वह देख रही थी उस विधाता के चमत्कार को जो मनुष्य की पग-पग पर परीक्षाए लिया करता है. जिनका आत्म विश्वास अडिग होता है वह इन परीक्षाओं में विजय पर लेता है और जिनका विश्वास मजबूत नहीं होता वह टूट कर बिखर जाते है.

आज मास्टर जी की दृढ़ इच्छा शक्ति और विश्वास के आगे मौत भी हार गई थी. सच ही तो है यदि मन में विश्वास हो तो फिर क्या संभव नहीं है. वह खुशी से दौड़ती हुई पिता के पास पहुँची और पिता से बोली 'पापा हम घर चल रहे है डॉक्टर ने आपको छुट्टी दे दी है' और यह कहते-कहते वह फिर रोने लगी पिता ने बड़े ही प्रेम से उसके सिर पर हाथ फेरा और फिर उसके कन्धे का सहारा लेकर बैड से उठने का प्रयास करने लगे.

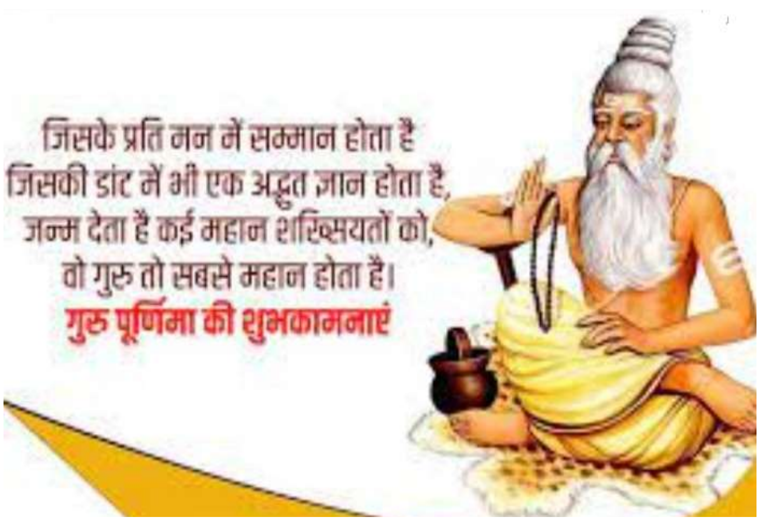


## पाठकों की चिट्ठी

आदरणीय संपादक महोदय
विश्व स्नेह समाज
सादर नमन

विश्व स्नेह समाज पत्रिका का मई अंक ई संस्करण अवलोकन का सुयोग मिला। संपादकीय आपकी बात में कोरोना काल की विषम परिस्थितियों में हो रही मृत्यु तथा विवाहोत्सव में हर्ष मनाने की दोनों स्थितियों का मार्मिक शब्दों में अंकन किया है। यह संसार है। मृत्यु शोक है, कभी भी आ सकती है, किंतु शादी भी जीवन में एक बार होने वाला संस्कार है। निबटाने तो दोनों अनुष्ठानों का होगा। आलेख हिंदी सूफी काव्य में धर्मनिरपेक्षता तथा धार्मिक पुस्तकें और विज्ञान में विषयों के बड़े सुंदर ढंग से निरूपण किया गया है। कविताएँ शाकाहार तथा मैं प्राण फूंकने आयी हूँ विशेष प्रभावी रहीं। अंक में अन्य साहित्यिक आयोजन भी प्रशंसनीय हैं। पत्रिका पठनीय, मननीय एवं संग्रहणीय है। अमित शुभकामना सहित

भवदीय

-गौरीशंकर वैश्य विनम्र
०९९५६०८७५८५
११७ आदिलनगर, विकासनगर, लखनऊ २२६०२२

# फितरत

पिछले माह मुझे मिसेज गुरुंग के घर जाने का मौका मिला. रात गहरा गई थी. मौसम भी बहुत अच्छा था. सर्दी के साथ-साथ अच्छा खाना, सूखे मेवे व गरमा-गरम चाय-कॉफी ने समय बांध दिया था. हम दोनों ड्राईंग रूम में बैठे बतिया ही रहे थे कि उनकी दोनों लड़कियाँ अपने बच्चों के साथ घर में आ गई. आते ही पर्स इधर फेंका, शाल कुर्सी के कोने पर टंगा दी और जूते अस्त-व्यस्त रख दिये, बच्चों ने अपना पूरा धमाल शुरु कर दिया. घर का माहौल क्षण भर में ही बदल गया. बच्चे रसोई की तरफ दौड़े, बोलते हुए, ''मामी जी भूख लगी है कुछ खाने को दो.'' लड़कियाँ भी आवाजें लगाने लगी, ''अरे, भाभी एक-एक कप चाय, पकौड़े हो जायें.'' बेचारी भाभी ''हां जी'' बोलकर रसोई की तरफ भागी. आध घंटे में सबकी फरमाइशें पूरी करके दस व्यक्तियों के खाने की तैयारी करने लगी. पता चला उसे चौथा महीना चल रहा है, पर किसी को भी परवाह नहीं. मुझसे रहा न गया. पूछ ही बैठी, ''मिसेज गुरुंग आपने लड़कियों की शादी लोकल की और ये जब-तब आएँ तो इससे काम नहीं बढ़ जाता, देखो दोनों जब से आई हैं, एक फोन पर, दूसरी टी.वी. के आगे और बच्चे धमाल किये हुए हैं, इससे बहू-बेटे के जीवन पर क्या असर पड़ेगा.'' उन्हें मेरी बात जरा न भाई. तपाक से बोलीं, ''मिसेज शर्मा, दोनों कमाती हैं, हर माह मेरे हाथ पर अच्छे पैसे रखती हैं. आखिर इन्हें पाला, पढ़ाया-लिखाया. शादी करके बेचा तो नहीं, इनका घर है जब चाहें आएँ-जाएँ, ससुराल में तो खटती ही है, यहाँ भी काम करें तो मायका क्या?'' मैंने पूछा, ''फिर इनके घर पर कौन देखभाल करता है?'' वह नाक-भौं तरेरकर बोली, ''इनकी माऐं यानि सासें और ननदें.'' मैं हैरान थी ये सब देख- सुनकर कि मेरी नजर उनकी बहू पर पड़ी जो १-१ किलो आटा गूंथ रही थी. मुझे उसकी तरफ देखते ही मिसेज गुरुंग बोली, ''गरीब घर की है, बाप भी नहीं, माँ है भाई के साथ रहती है. जान-बूझकर लाये इसे, घर का काम तो करे और दो रोटी खाती रहे व पड़ी रहे.'' मेरे लिये अब रुकना मुहाल हो गया इस फितरती माहौल में. मैं उठी और भारी कदमों से घर वापिस आ गई.

# कलयुगी बेटा

मैं किसी काम से बैंक में बैठी थी. कार्य कुछ ज्यादा होने की वजह से मैं मैनेजर के चैम्बर में चली गई. अकेली थी काम ज्यादा. कुछ फार्म भरकर मैंने मैनेजर साहब को थमाए. उन्होंने मुझे बैठने व कुछ देर और इन्तजार करने को कहा. मैं बैठ कर इधर-उधर आए लोगों को निहारने लगी कि बैंक के मेन गेट से लम्बा, ऊँचा, सुन्दर सा युवक, आधुनिक वेशभूषा में प्रवेश हुआ और मैनेजर साहब का कमरा खेल अन्दर आ गया. पीछे हाथ बाँधे, एक लिफाफा हाथ में थामे उसने कहा, ''सर, मुझे बहुत जरूरी सूचना चाहिये?'' मैनेजर ने उसे बैठाया व पूछा, ''हाँ, बताओ मैं तुम्हारी क्या मदद कर सकता हूँ.'' उसने लिफाफा आगे बढ़ाते हुए कहा, ''सर, इसमें मेरे पिताजी के बैंक के कुछ कागज हैं, मुझे पता करना है कि यह पैसा किसको मिल सकता है और मुझे यह पैसा लेने के लिये क्या-क्या कार्यवाही करनी होगी, जल्दी बताइए.'' लिफाफा खोलते ही मैनेजर सकते में आ गया. उसने कहा, ''अभी इसी सप्ताह तो वो अपनी पेंशन लेकर गये हैं, मेरे साथ चाय पी है, क्या हुआ उन्हें? कब हुआ?'' लड़का बोला, ''परसों सुबह वो हमें छोड़कर चले गये.'' मैनेजर ने कहा, ''भले मानस डैथ सर्टीफिकेट लेने तक तो इन्तजार करते. इतनी भी क्या जल्दी है. आज तीसरा ही दिन है. '' उसने जवाब दिया, ''सर, वो तो आराम से मर गये. हमें अब समाज की भी लाज रखनी है. खर्च करूँगा उतने हिसाब से ही जो छोड़ कर गये हैं मेरे लिये.'' मैनेजर ने कम्प्युटर खोला तो देखा, उसकी आँखों में आँखें डालकर बोला, ''बेटा तेरे नाम कुछ नहीं है, उनके सारे खाते तुम्हारी माँ के नाम है. उसकी मर्जी है तुम्हें दे या न दे. '' लड़का बिजली सा उठा, कागज समेटे व गुस्से में बोला, ''मरता भी ढंग का काम न कर गया, अब करे ये बुढ़िया जो चाहे, मैं तो चला कल अपनी नौकरी पर.'' मैं पैसे के लिए पागल इस कलयुगी औलाद को ताकती रह गई.

**-शबनम शर्मा,** सिरमौर, हि.प्र.

# रंग

टन-टन करके दरवाजे की घंटी बजी राम लखन ने बड़े उत्साह से दरवाजा खोला. अरे! आप लोग आगे आइए-

आइए बैठिए! रेखा की मां देखो यह लोग आ गए. मां भी दौड़ती हुई आई नमस्कार जी बैठिए मैं आप लोगों के लिए कुछ खाने का इंतजाम करके लाती हूं.

दनादन प्लेट पर प्लेट हाजिर हो गई यह सब तो ठीक है पहले लड़की को दिखाओ बाद में नाश्ता करेंगे लड़की को बुलाया गया अरे लड़की इतनी काली मैंने तो सोचा भी नहीं था, हमारे खानदान में यह नहीं चलेगी उठकर वे लोग चलने लगे तो राम लखन ने पैर पकड़ते हुए कहा अरे ऐसा मत करिए... ठीक है एक बात पर हम लोग शादी कर लेंगे पहले यह बताओ दहेज में क्या मिलेगा? आप लोग कहेंगे ठीक है हमें क्या इस गाड़ी घर का सारा सामान और भी....

जी ठीक है.

शादी की तारीख पक्की हो गई राम लखन भी तैयारी में लग गए सारी चीजों को खूब देख कर जान समझ कर खरीदते कहीं कोई सामान में कमी ना रह जाए उन्होंने अपनी कोशिश से सारे सामान को खूब परख कर ले लिया.

शादी करके लड़की गई तो आपस में लोग बतियाते की लड़की तो सुंदर नहीं लेकिन दहेज खूब मिला. सास ने एक-एक सामान को खोलना शुरू किया यह क्या? यह कपड़े हैं ऐसे कपड़े तो मैं बाहर भिखारियों को दे देती हूं ससुर और पति भी सामान देखो यह फ्रिज है मैंने तो एलजी का कहा था यह पता नहीं कौन सी कंपनी का दे दिया. सामान भी कोई ढंग का नहीं ऊपर से यह काली कलूटी को भी मेरे ही सिर पर मढ दिया. पता नहीं कहां के जाहिल गवार मिल गए हैं.

रेखा की आंखों से जल की बूंदें टपक रही थी.

-कु० रत्ना सिंह
शिक्षा-स्नातक, पेशे से-नर्स
स्काउटिंग के क्षेत्र में राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित. सम्पर्क-पहाड़पुर कासो, रायबरेली, उत्तर प्रदेश.

## संपादक के नाम पाती

आप सभी पाठकगण पत्रिका में प्रकाशित लेखो पर अपने विचार या कोई सुझाव नीचे दिये गये ई-मेल आईडी पर भेज सकते है। स्थान की उपलब्धता के हिसाब से हम आपके विचारों को शामिल करने का प्रयास करेंगे।

ईमेल :
vsnehsamaj@rediffmail.com

-संपादक

## रिश्ते

पापा, डैडी बड़े पापा तक ठीक था।
बड़ी अम्मा, मां को मम्मी तक ठीक था।
अंकल आन्टी तक भी हमने मान लिया,
शब्दों को तोड़ने का, जाने कहां से ज्ञान लिया।
मैं हैरान सा हूँ शब्दों को तार तार देखकर,
चाचा चाचू मामा मामू,
नई पीढ़ी का नवाचार देखकर।
बच्चों तुम अब शब्दों तक ही रूक जाना,
शब्दों की तरह रिश्तों को चोट न पहुँचाना।

-सुरेन्द्र पाल सोनी,
हनुमानगढ़, राजस्थान

# संस्कृति व अध्यात्म से कोरोना को हराना संभवः डॉ० पाठक

प्रकृति और ब्रह्मांड के भीतर पर्यावरण का महत्व अबाधित है. अतः भारतीय संस्कृति व अध्यात्म को अपनाने से कोरोना को हराना संभव है. ये विचार डा. विनय कुमार पाठक, पूर्व अध्यक्ष, राजभाषा आयोग, छत्तीसगढ़, रायपुर ने व्यक्त किये. विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान, प्रयागराज, उ. प्र. की छत्तीसगढ़ इकाई द्वारा 'कोरोना एवं पर्यावरण का संबंध' पर विषय पर आयोजित अंतरराष्ट्रीय आभासी गोष्ठी में कही. डा. पाठक ने आगे कहा कि, प्रकृति जितना हमें देती है, उतना ही ग्रहण करना चाहिए. वर्तमान वैश्विक संकट कोविड महामारी प्रकृति की छेड़-छाड़ का परिणाम है. कोरोना काल में प्रकृति प्रसन्न है, उसमें कोई प्रदूषण नहीं है. लेकिन हम सब सिकुड़ गये हैं.

श्रीमती सुवर्णा जाधव, मुंबई ने कहा कि पूरा विश्व आज कोरोना की चपेट में है. परंतु कोरोना ने पर्यावरण को बचाए रखा है. क्योंकि आज नदी का जल स्वच्छ है, सड़कों पर वाहन नहीं, कंपनियां बंद हैं.

प्राचार्य डा. हंसा शुक्ला, भिलाई ने कहा कि पेड़ पौधों का हमारे जीवन में बहुत महत्व है. लेकिन प्रकृति के प्रति हमारी उदासीनता से विश्व कोरोना से ग्रस्त है. प्रकृति के दोहन से विकास के नाम पर हम विनाश के शिकार हो रहे हैं.

डा. पूर्णिमा झेंडे, नासिक, महाराष्ट्र ने कहा कि पर्यावरण संतुलन के लिए हमें बदलना होगा. अपनी नकारात्मक सोच व बुरी आदतें बदलते हुए संयमित जीवन व्यतीत करें. कोरोना काल मे पूर्णबंदी के भीतर प्रदूषण पचास प्रतिशत कम हुआ है. प्रो. ललिता जोगड़, मुबंई ने कहा कि कोरोना ने समझदारी और साझेदारी का मंत्र दिया. क्योंकि यथार्थ मे पुरुषार्थ बनाये रखने में हमारी समझदारी हैं. अति से दूर रहते हुए धैर्य से काम करना चाहिए.

श्री ओमप्रकाश त्रिपाठी, सोनभद्र ने अपनी प्रस्तुति में कहा कि प्रकृति का नियम ही है कि पर्यावरण का संतुलन बनाए रखना. असंतुलन होने पर अनेक आपदाएं उपस्थित होती हैं. मानव द्वारा प्रकृति की छेड़-छाड़ करने से प्रकृति ने अपना विकराल रूप दिखाया है.

डा. पूर्णिमा मालवीय, प्रयागराज ने कहा कि हमे कोरोना ने हमें पर्यावरण के मध्य रहना सिखाया है. क्योंकि जहां पर्यावरण असंतुलन दिखाई देगा. वहीं कोरोना अपना प्रकोप दिखायेगा. गोष्ठी की अध्यक्षता कर रहे संस्थान के अध्यक्ष प्राचार्य डा. शहाबुद्दीन नियाज मुहम्मद शेख, पुणे ने कहा कि आज पूरा विश्व कोविड-19 की गिरफ्त में है. प्रकृति ने साबित किया है कि प्रकृति की विजय होती रहेगी. प्रकृति अजेय थी, अजेय है और अजेय रहेगी. जल, जंगल और जमीन के दोहन को रुकना चाहिए.

प्रस्तावना में संस्थान के सचिव डा. गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी ने कहा कि प्रकृति और मनुष्य का बहुत पुराना सम्बंध रहा है. प्रकृति से छेड़छाड़ कोरोना महामारी का मूल है. इस अवसर पर डा. मीरा सिंह फिलेडेल्फिया, अमेरिका ने पर्यावरण पर अपनी कविता प्रस्तुत की. श्रीमती मधु शंखधर, प्रयागराज ने संक्षेप मे विचार रखें.

सरस्वती वंदना डा.ज्योति तिवारी, दिल्ली ने तथा स्वागत उद्‌बोधन डा. रश्मि चौबे, गाजियाबाद ने किया.

गोष्ठी का संचालन डा. मुक्ता कान्हा कौशिक किया.

जूम पटल पर आयोजित गोष्ठी में मनीषा सिंह, चंदन मित्रा, वीर अभिमन्यु सिंह, डा. अनीता ठाकुर, डा. अनीता सिंह, श्रीमती पुष्पा श्रीवास्तव, श्री निवास कंडाला, प्रियंका महंत सहित अनेक विद्वान उपस्थित थे.

# व्यापक पर्यावरणीय चेतना के कवि हैं पंत : प्रो. शर्मा

सुमित्रानंदन पंत की काव्यानुभूति और वर्तमान विश्व पर केंद्रित भारत की प्रतिष्ठित संस्था राष्ट्रीय शिक्षक संचेतना द्वारा एक दिवसीय अंतरराष्ट्रीय वेब संगोष्ठी एवं कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया. संगोष्ठी के मुख्य अतिथि हिंदी परिवार- इंदौर के संस्थापक डॉ० हरेराम वाजपेयी, अध्यक्षता विक्रम विश्वविद्यालय-उज्जैन के कुलानुशासक प्रो० शैलेंद्र कुमार शर्मा, मुख्य वक्ता राष्ट्रीय मुख्य संयोजक प्राचार्य डॉ० शहाबुद्दीन नियाज मोहम्मद शेख, पुणे, विशिष्ट अतिथि वरिष्ठ प्रवासी साहित्यकार श्री सुरेशचंद्र शुक्ल 'शरद आलोक' ओस्लो- नार्वे, श्रीमती सुवर्णा जाधव-मुंबई, डा. विमल कुमार जैन, श्री जी. डी. अग्रवाल-इंदौर, डा. मुक्ता कान्हा कौशिक-रायपुर एवं राष्ट्रीय महासचिव डॉ० प्रभु चौधरी थे.

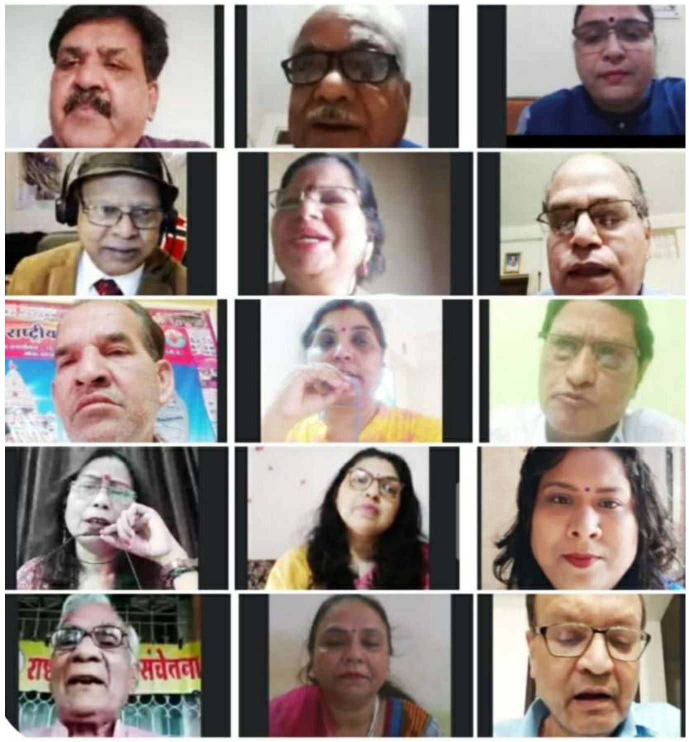


मुख्य अतिथि श्री हरेराम वाजपेयी ने कहा कि पंत को याद करना प्रकृति की पूजा करना है. प्रकृति का खजाना अखूट है, जिससे कवि प्रेरणा लेता है. पंत जी प्रकृति के चितेरे हैं. उनको पढ़ना अनंत की ओर यात्रा करना है. उनके काव्य से जीवन को प्रकाश मिलता है.

प्रो० शैलेंद्र कुमार शर्मा ने कहा कि कविवर सुमित्रानंदन पंत व्यापक पर्यावरणीय चेतना के कवि हैं, जिसे वर्तमान विश्व को जरूरत है. उनके काव्य में कल्पना की स्वच्छंद उड़ान और प्रकृति के प्रति तादात्म्य रिश्ता मिलता है. उन्होंने प्रकृति तथा मनुष्य जीवन के कोमल और कठोर रूपों को अपने काव्य का विषय बनाया. वे कल्पना के सत्य को सबसे बड़ा सत्य मानता हैं. वे अपने युगीन संदर्भों से संपृक्त होकर निरन्तर गतिशील बने रहे. उनके काव्य से गुजरना पिछली सदी के विभिन्न काव्य सोपानों से होकर गुजरना है.

डॉ० शहाबुद्दीन नियाज मोहम्मद शेख, पुणे ने कहा कि सुमित्रानंदन पंत छायावाद के अग्रगण्य कवि हैं. निजी अनुभूति का समाजीकरण पंत के काव्य में दिखाई देता है. उनकी कविताएं हृदय को स्पर्श करती हैं. उनके काव्य पर स्वामी विवेकानंद, महर्षि अरविंद, महात्मा गांधी और मार्क्स का प्रभाव दिखाई देता है. वे गांधीजी के प्रभाव से असहयोग आंदोलन में सम्मिलित हुए थे. श्रीमती सुवर्णा जाधव, मुंबई ने कहा कि पंत जी ने छायावाद को नई गति दी. विषयवस्तु की भिन्नता के बावजूद कल्पना की उड़ान उनके काव्य की विशेषता है. उन्होंने प्रकृति सौंदर्य का जीवंत वर्णन किया है.

श्री सुरेशचंद्र शुक्ल शरद आलोक, ओस्लो, नार्वे ने पंत काव्य की विशेषताओं पर प्रकाश डालते हुए स्वरचित कविता समय पर आए ना ऋतुराज सुनाकर श्रोताओं को मंत्रमुग्ध किया.

इस अवसर पर डा. विमल कुमार जैन, डा. मुक्ता कान्हा कौशिक, श्री जी. डी. अग्रवाल, डॉ० रश्मि चौबे ने भी अपने विचार व्यक्त किए. कार्यक्रम में कवि श्रीराम शर्मा परिंदा-मनावर, डॉ० उर्वशी उपाध्याय-प्रयागराज, डॉ. गरिमा गर्ग-पंचकूला ने अपनी रचनाएं पढ़ी. संगोष्ठी में डा. गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी, प्रयागराज, डा. रूली सिंह, मुंबई, डा. शिवा लोहारिया, जयपुर, डा. चेतना उपाध्याय, अजमेर, श्री जयंत जोशी, डा. समीर सैयद, डा. बालासाहब तोरस्कर, पूर्णिमा झेंडे, शकुंतला सिंह, सुनील मतकर, डा.सुनीता चौहान, सुनीता गर्ग, डा. गायत्री खंडाटे, डा. सरोज मैती आदि उपस्थित थे. संगोष्ठी का संचालन श्रीमती लता जोशी एवं आभार प्रदर्शन संस्था के महासचिव डा. प्रभु चौधरी ने किया.

## फिल्म संसार के १२५ वर्ष पूरे होने पर शानदार फिल्मों की यादें

# आवारा, शोले, मुग्ले आजम, पाकीजा, मदर इंडिया, हम आपके हैं कौन को दर्शक कैसे भूल सकेंगे।

26 जुलाई 1896 को बम्बई में वारसन होटल एक आर्ट गैलेरी के सामने भारत में फिल्मों का पहला शो सिनेमा लाने वाले लुमरिये ब्रदर्स ने किया था. 2021 में फिल्म संसार 125 वर्ष पूरे कर रहा है. इस अंतराल में देश व दुनिया की करीब 400 भाषाओं में फिल्में बनती रही. मैंने भी अपनी फिल्मों की 70 वर्ष की लेखनी मात्र में हजारों फिल्में देखी न सिर्फ इंदौर में बल्कि भारत के 65 अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोहों में इसमें 50 समारोह तो भारत सरकार के थे.

इन समारोहों में मैंने करीब 3–4 हजार फिल्में देखी व विश्व की बेहतरीन व चर्चित फिल्मों का आनंद लिया. एक अनुमान व मेरे गुणा भाग में इन समारोहों में फिल्में देखने व भाग करने पर करीब 13 अरब रूपये खर्च हो गये. मैंने 14 वर्ष की आयु में फिल्मों पर लिखना शुरू किया और अब 84 वे वसंत तक यह सिलसिला जारी है.

लेकिन इस लेखन भाग के 70 वर्षों में भारत की कुछ ऐसी फिल्में देखी जिनको भूल पाना मेरे जीवन में नामुमकिन है. हॉलीवुड, जापान, रूस, इटली, चीन, जर्मनी, इंग्लैंड, मम्मी केरिया की फिल्में तो छाप छोड़ गई लेकिन भारत की राजकपूर जैसे निर्माता निर्देशक कलाकार की फिल्में आवारा, संगम, मेरा नाम जोकर, ऋषिकेश मुखर्जी की आनंद, मुसाफिर, मेहबूब साह की मदर इंडिया, के आसीक की मुग्ले आजम कमाल अमरोरी की

पाकीजा विजय तीन भाई की वैपूवावरा, गुरूदत्त की चौदहवीं का चांद व कागज के फूल, अशोक कुमार की मटक, अमिताभ बच्चन की जंजीर, के विश्वनाथ की सरगम, व्ही, भगतराम की झनक झनक पायल वाजे, दो आंखें बारह हाथ, नवरंग की जो जीता वा सिकन्दर लगन विधु विवेक चौपड़ा की थ्री इडियट्स, विनकराम की दो बीघा जमीन, जापान की कागेमुशा, असम की ब्रिज, लखनऊ की बनी मेहमनिया व उमर स एबीएम की भाभी सहित व फिल्म फैमिली की

प्रस्तुति-ब्रजभूषण चतुर्वेदी-बीबीसी)

इंसानियत, घूंघट कराना, रामानंद सागर की आरजू आंखें एवं धारावाहिक रामायण, बीआर चोपड़ा की फूल का फूल, साधना, नया दौर एवं रवि चोपड़ा की महान धारावाहिक महाभारत, संजीव कुमार की खिलौना, सूरज बड़जात्या की हम आपके हैं कौन, एसएस वासन की संसार, कुछ ऐसी फिल्में मैंने देखी, उनकी यादों को देखकर हमेशा रोमांचित होता रहता हूं. वास्तव में कुछ फिल्में ऐसी होती थी जिन्हें देखकर 125 वर्ष के सिनेमा के इतिहास का गौरव दिखाई देता है.

ऐसी महान फिल्मों में कुछ कलाकारों का अभिनय देखकर भी गजब की लोकप्रियता सामने आती है. सदी के महानायक अभिताभ बच्चन की जंजीर व दो बार, आनंद फिल्मों ने गजब ढा दिया, संजीव कुमार व मुमताज की खिलौना देखकर ऐसा लगा कि यह अकिना की पराकाष्ठा ही है. मधुशाला व दिलीप कुमार की मुग्ले आजम जैसे किरदार की फिल्म क्या दुबारा बन सकती है.

क्या भारत भूषण मीना कुमार की बैजूवावरा संगीत की फिल्म कोई बना

सकता है. क्या कमाल अमरोही की अशोक कुमार अभिनव की महज बन सकती है. क्या माधुरी दीक्षित व सलमान की हम आपके हैं कौन कोई बना सकता है.

राजश्री प्रोडक्शन की 56 में से 50 फिल्में समाज की दशा कराने वाली फिल्में नहीं है.

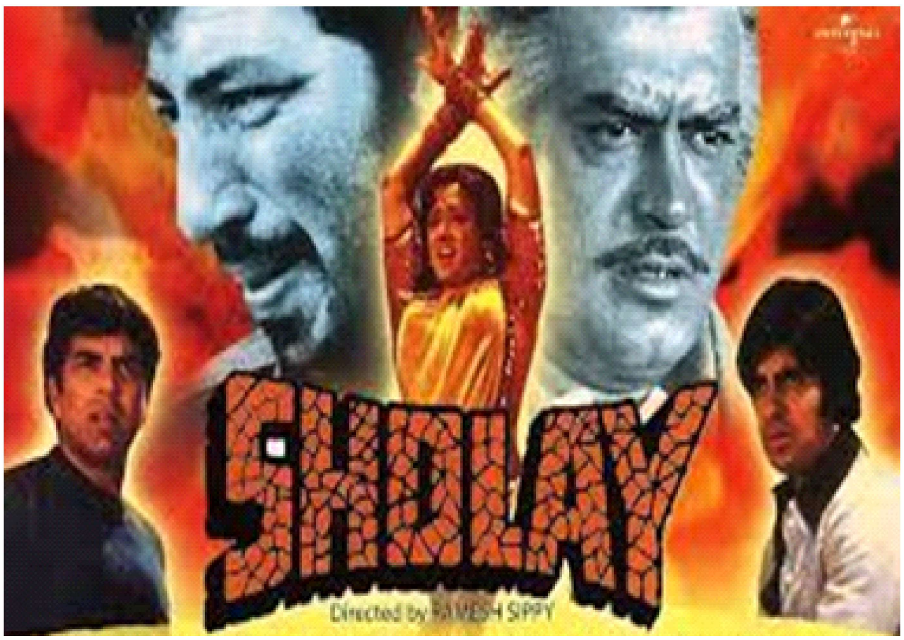


अंखियों के झरोखों से, गीता गरिमा चल, दोस्ती जैसी सफल फिल्मों के रीमेक बन सकती है. सारांश में अनुपम खैर के अभिनय को कोई भुला सकता है. नादिया जानकवस के स्टंट की फिल्में कौन बनायेगा. देश किसके की गांधी दुबारा बन सकती है. वास्तव में ये फिल्में इतिहास रचकर दर्शकों के दिल दिमाग को झकझोर कर चली गई. मैंने भारत के 50 वें अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म समारोहों में भाग लिया. वहां विश्व की सर्वोत्तम से सर्वोत्तम एम्वाज सेन्स से भरपूर सैकड़ों फिल्मों का दिल्ली के विद्याभवन, श्री कोर्ट, बम्बई के मेट्रो सिनेमा, दिल्ली के प्लाजा व उपहार सिनेमा, मद्रास, बैंगलौर, हैदराबाद, त्रिवेन्द्रम, कलकत्ता के नंदन जैसे थियेटरों में खूब आनंद लिया. मैं अपने को बहुत भाग्यशाली मानता हूं कि मैंने जीवन में फिल्मों का न सिर्फ आनंद लिया व भरपूर लिखा भी. संसार के सर्वश्रेष्ठ कलाकारों निर्माता निर्देशकों से मिला व पत्रकार वारियों का आनंद लिया.

हां एक बात में भारतीय फिल्मों के बारे में करना चाहता हूं वह है मधुर संगीत की क्या हम हुस्नवाज भगताराम चित्रगुप्त कामायणी आनंद जी लसीकोटा फरेब, खय्याम, नौशाद अली, मदन मोहन को दरकिनार कर सकते हैं. उनका संगीत फिल्मों की व अभिनय की बातों का जीवंत बनाता है. रवीन्द्र जैन सूरदास संगीतकार को आप कहां से वापस लायेंगे. क्या लता मंगेश्कर, अनुराधा पौडवाल, अलका याज्ञिक, आशा भोंसले, मोहम्मद रफी, नौशाद, किशोर कुमार, जैसे नायक हमें फिर मिलेंगे.

सिनेमा संसार का 125 वर्षों का इतिहास व हजारों हर भाषा की फिल्में जीवन के यथार्थ को दर्शाती है. जहां 100 वर्षों तक दादा फालके, विमलराम आदि ने सिनेमा को उंचाईयां दी. फिल्मों के इतिहास रचे वही विगत 25 वर्षो में मनोरंजन था. मैं थकान महसूस करता हूं. फिल्मों से संगीत व स्वरोधी मि. गायब हो गई है. हम फिल्मों पर पाश्चात्य देशों की नकल पर उतारू आ गये. शायद आपको यष चौपड़ा की संगीतमयी फिल्मों को भूलना ही पड़ सकता है. जब मिठास व संदेश ही नहीं है तो उन फिल्मों को कैसे देखें. लेकिन फिल्मों का 125 वर्षों का सुनहरा अवसर सदैव याद करने के लिये ही जाना जायेगा जो है उसे स्वीकार करें जो नहीं है उसे भूलें. कहावत है जो कष्ट करते हैं व अमर होते व जो वरनत है वे अमर नहीं होते. लेकिन 20वीं सदी की इस मनोरंजन की दुनिया को सलाम करने की इच्छा सदैव बनी रहती है.

-३०१, प्रभात रेसीडेंसी, तिलकपथ मेन रोड, इन्दौर-४५२००७

# हद से ज्यादा पानी पीना भी हो सकता है नुकसानदायक

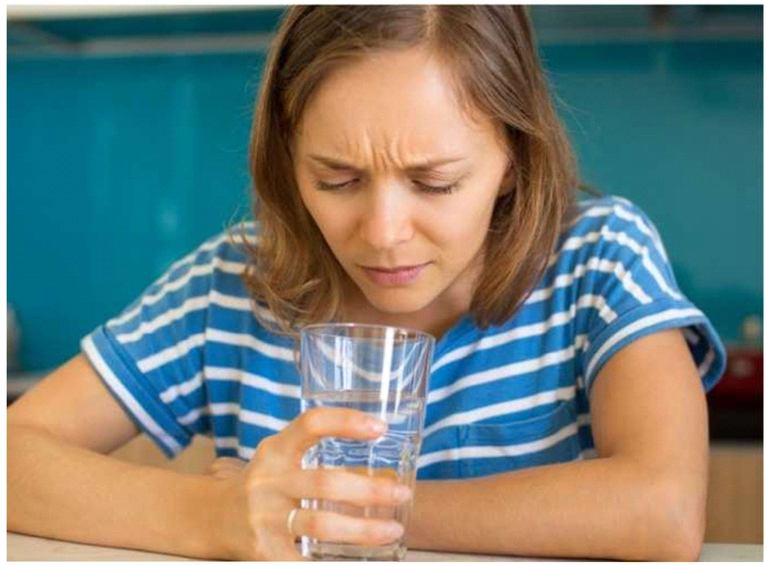

ईश्वर से मिली हुई सबसे बहुमूल्य वस्तुओं में सबसे खास है पानी. पानी की जरूरत पेड़ पौधों, जानवरों, पक्षियों, और इंसानों को भी होती है. हम सभी ने बचपन से लेकर आज तक बड़ों को यही कहते सुना है जितना ज्यादा पानी पिएंगे उतने अधिक स्वस्थ रहोगे। लेकिन माना तो यह भी जाता है कि आवश्यकता से अधिक किसी भी चीज का सेवन केवल नुकसानदायक ही होता है. ऐसा ही कुछ पानी के साथ भी है. यानी अगर आप जरूरत से ज्यादा पानी पीते हैं तो इससे आपको ओवरहाइड्रेशन की समस्या होने लगती है. ओवरहाइड्रेशन को इंटहक्सिकेशन भी कहा जाता है.

इस स्थिति में व्यक्ति के शरीर में पानी का अधिक सेवन करने से इलेक्ट्रोलाइट इंबैलेंस या लो सोडियम की दिक्कत होने लगती है. ऐसे में उल्टी, सिर दर्द और मतली जैसे लक्षण भी दिखाई देने लगते हैं. क्या आप भी अधिक पानी पीते हैं तो कहीं आपको तो ओवरहाइड्रेशन की समस्या नहीं है. क्योंकि अगर यह स्थिति आपकी भी है तो आपको भी बहुत से नुकसान झेलने पड़ सकते हैं जो कुछ इस प्रकार हैं.

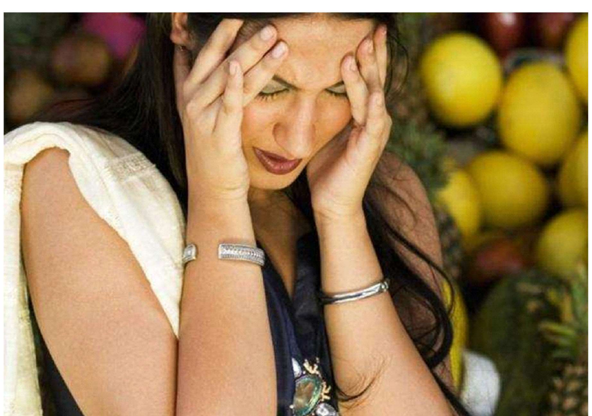

**किडनी को नुकसान :** ओवरहाइड्रेशन की वजह से हमारी किडनी को भी नुकसान होता है. दरअसल जब हम अधिक पानी पीते हैं तो इसकी वजह से आर्जिनिन वैसोप्रेसिन का प्लाज्मा स्तर कम हो जाता है. जिसका सीधा असर किडनी की कार्य क्षमता पर पड़ता है. ऐसे में अधिक पानी पीने से बचना आपके लिए बेहद जरूरी है.

**मस्तिष्क पर होने वाला असर :** अगर आपको ओवरहाइड्रेशन है तो इसकी वजह से सोडियम का कम होता लेवल ब्रेन सेल्स में सूजन पैदा हो जाती है. जब ऐसा होता है तो आपको अपनी बात रखने या कहने में दिक्कत होती है, ठीक से चल पाना भी मुश्किल हो जाता है. इसके अलावा कन्फ्यूजन की समस्या का भी सामना करना पड़ सकता है.

**सेल्स में आ जाती है सूजन :** जब आप जरूरत से ज्यादा पानी पीने लगते हैं तो इसकी वजह से शरीर में सोडियम का लेवल कम होने लगता है. जिसके बाद पानी अहस्मोसिस प्रक्रिया के जरिए सेल्स में प्रवेश कर लेता है. इसी के कारण सेल्स में सूजन की समस्या होने लगती है. यह स्थिति बहुत गंभीर समस्या को जन्म दे सकती है, जैसे मसल्स टिशु और ब्रेन का डैमेज होना आदि.

# सम्मानार्थ प्रस्ताव आमंत्रित हैं

साहित्य जगत् में लोकप्रिय, विष्वसनीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर चर्चित **विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान,** 2003 से लगातार साहित्यिकारों/पत्रकारों/समाजसेवियों/कलाकारों को सम्मानित करता आ रहा है. इस वर्ष निम्नांकित सम्मान प्रस्तावित है-

**1–20 वर्ष से कम उम्र वालों के लिएः** पं. नेहरु सम्मान, श्रीमती चन्द्रावती देवी स्मषति सम्मान, श्री गोरखनाथ दुबे स्मषति सम्मान, बचपना सम्मान **2–20 से 40 वर्ष के लिएः** काका कलाम सम्मान, कल्पना चावला सम्मान, निर्भया सम्मान, पत्रकारश्री **3–40 वर्ष से ऊपर के लिएः** डॉ. होमी जहांगीर भाभा सम्मान, पत्रकार रत्न, समाज शिरोमणि, काव्य शिरोमणि, साहित्य शिरोमणि, **4-सभी आयु वर्ग के लिएः** विशिष्ट हिन्दी सेवी/हिंदी सेवी सम्मान, **राष्ट्रभाषा सम्मान, राजभाषा सम्मान, शिक्षकश्री, विधिश्री,** 5-समग्र साहित्य के लिए संस्थान की सबसे बड़ी उपाधियां क्रमश : साहित्य रत्न(डी.लिट), साहित्य गौरव(डाक्टरेट/पीएचडी), साहित्यश्री हैं.

अन्य किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए ईमेल करे, या व्हाट्सएप करें:

**अंतिम तिथिः 15 दिसम्बर 2021**

## चतुर्थ लघु कथा प्रतियोगिता

# पुरस्कार राशि 5000/रुपये मात्र

देश-विदेश का कोई भी लेखक इसमें प्रतिभाग कर सकता है. इस प्रतियोगिता में उम्र का कोई बंधन नहीं है. आपको अपनी एक लघु कथा पठनीय हस्तलिपि अथवा टंकित कराकर भेजनी होगी। रचना के साथ अपना पूरा नाम, पता, एक फोटो, ह्वाट्सएप नंबर अगर ई-मेल हो ईमेल आईडी भेजना होगा। इस बात का विशेष ध्यान रखें कि लघु कथा 300 (तीन सौं) शब्दों से अधिक की न हो.

## नियम एवं शर्तेः

1. रचना मौलिक होनी चाहिए. इसके लिए मौलिकता का प्रमाण देना आवश्यक होगा। किसी भी स्तर पर मौलिकता में कमी सिद्ध होने पर प्रतिभागिता रद्द कर दी जाएगी। 2. प्रतियोगिता तीन चरणों में होगी. प्रत्येक चरण के विजयी प्रतिभागियों को ह्वाट्स समूह, ई-मेल के माध्यम से जानकारी दी जाएगी. 3. प्रथम चरण के प्रतिभागियों को विश्व स्नेह समाज की मासिक पत्रिका एक वर्ष की सदस्यता निःशुल्क दी जाएगी। 4. द्वितीय चरण के लिए चयनित प्रतिभागियों को विश्व स्नेह समाज की मासिक पत्रिका दो वर्ष की सदस्यता निःशुल्क दी जाएगी। 5. तृतीय एवं अंतिम चरण के लिए एक रचनाकार का चयन किया जाएगा. जिसे इलाहाबाद में आयोजित होने वाले साहित्य मेला में पुरस्कार राशि और प्रमाण पत्र स्वयं उपस्थित होकर ग्रहण करना होगा। विजेता को विश्व स्नेह समाज की मासिक पत्रिका पंचवर्षीय सदस्यता निःशुल्क दी जाएगी। 6. प्रतिभागियों को मांगे गये विवरण के साथ रुपये दो सौ पचास का चेक/डीडी/आरटीजीएस/नेफ्ट/आन लाईन अथवा`सीधे संस्थान के खाते में जमा कर जमा रसीद की प्रति भेजना अनिवार्य होगा। खाता धारक का नामः **'सचिव विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद'**

बैंक का नाम : **युनियन बैंक ऑफ इंडिया** शाखा : **प्रीतम नगर, इलाहाबाद,** खाता संख्याः **538702010009259**

आई.एफ.एस. कोडः यूबीआईएन 0553875

# रजत जयंति आयोजन

संस्थान जून 2021 में अपना 25 वर्ष पूर्ण कर रहा है। इस अवसर पर दो दिवसीय वृहद आयोजन किया जाएगा. आयोजन संभावित तिथियां

**प्रथम दिन, दिन रविवार, 05.09.2021**

-संस्थान के कुलगीत का लोकार्पण
-संस्थान की वेबसाईट का लोकार्पण
-संस्थान की रजत जयंति स्मारिका का विमोचन
-काव्य सम्राट प्रतियोगिता-2019—20
-सारस्वत सम्मान 2019—20
-श्री पवहारी शरण द्विवेदी स्मृति न्यास द्वारा सारस्वत सम्मान
-मीडिया फोरम ऑफ इंडिया न्यास द्वारा सारस्वत सम्मान

**दूसरे दिन सोमवार,06.09.2021**

-संस्थान नवनिर्मित निज पुस्तकालय एवं वाचनालय का उदघाटन
-संस्थान के पदाधिकारियों/हिन्दी सांसदो एवं सदस्यों परिचय सत्र
-संस्थान के पदाधिकारियों/हिन्दी सांसदो एवं सदस्यों की काव्य, चित्रकला, काव्य अतांकक्षरी प्रतियोगिता, नृत्य एवं गायन प्रतियोगिता

इस आयोजन में 25 प्रतिभाओं (साहित्य/समाज सेवा/कला/संस्कृति) को संस्थान की उपाधियों / सारस्वत सम्मानों से सम्मानित किया जाएगा। आप सभी गण रजत जंयति स्मारिका के लिए सशुल्क शुभकामनाएं, अपने प्रकाशनों का प्रचार-प्रसार, विज्ञापन, चंदा के माध्यम से यथा सम्भव सहयोग प्रदान करें। संस्थान के पदाधिकारियों/सदस्यों के लिए सामूहिक आवास एवं भोजन की व्यवस्था संस्थान करेहिन्दी सांसदो एवं सदस्योंतथा एक स्मारिका का प्रकाशन भी किया जाएगा. अगर आप इस समारोह में प्रतिभाग करना चाहते हैं तो अपना पंजीकरण ई-मेल के माध्यम से पंजीकरण प्रपत्र प्राप्त कर १५ अगस्त २०२१ तक करा सकते है। सभी पंजीकृत प्रतिभागियों को सहभागिता प्रमाण पत्र व उपहार सामग्री प्रदान की जाएगी.

सचिव, विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान,
एल.आई.जी—93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद-211011, व्हाटसएप नं०: 9335155949, sahityaseva@rediffmail.com, hindiseva15@gmail.com

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी द्वारा एकेडेमी प्रेस, से मुद्रित तथा एल. आई.जी. 93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद से प्रकाशित।